वार्षिकप्रतिवेदनम्

(ANNUAL REPORT)

सत्रम् 2020 - 21

विक्रमसम्वत् २०७७ – ७८

(1 जुलाई 2020- 30 जून 2021)

प्रकाशक:

कुलसचिव:

महर्षिपाणिनिसंस्कृत एवं वैदिकविश्वविद्यालय:

MAHARSHI PANINI SANSKRIT EVAM VEDIC VISHWAVIDYALAYA

देवासमार्ग:, उज्जयिनी (मध्यप्रदेश:)- 456010

Email: regpsvvmp@rediffmail.com, Website: www.mpsvv.ac.in

Phone:- 0734-2922037

वार्षिक प्रतिवेदन
(ANNUAL REPORT)

संस्कृत भाषा एवं प्राचीन ज्ञान-विज्ञान परम्परा के संरक्षण अभिवर्धन एवं उन्मुखीकरण के लिए मध्यप्रदेश शासन के संकल्प से महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 द्वारा मध्यप्रदेश की प्राचीन पौराणिक नगरी उज्जैन में महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। अपने स्थापना वर्ष से वर्तमान सत्र तक इस विश्वविद्यालय को स्थापित हुए कुल 13 वर्ष की अवधि पूर्ण हो चुकी है। यह विश्वविद्यालय सकारात्मक सृजन एवं उत्कर्ष की मूल भावना के साथ शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रोत्थान के नैतिक उत्तरदायित्व निभाने में सक्षम नागरिकों के निर्माण हेतु कृतसंकल्प है। भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धान्तों में निहित ज्ञाननिष्ठ, समावेशी, उदात्त, सहिष्णु एवं सार्वभौमिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समर्पित यह विश्वविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। संस्कृतभाषा, प्राचीन शास्त्र परम्परा,भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में मूल्यपरक अध्ययन-अध्यापन, अनुसन्धान तथा गवेषणा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। वर्तमान सत्र के क्रियाकलापों सहित विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वर्ष दिनांक 01 जुलाई 2020 से 30 जून 2021 तक का वार्षिक प्रतिवेदन महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, अधिनियम 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 की धारा 43 के अन्तर्गत प्रस्तुत है।

कुलसचिव

विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न तथा आदर्शवाक्य

प्रतीकचिह्न –महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने हेतु एक प्रतीकचिह्न को स्वीकार किया गया है। इस प्रतीक चिह्न में आभायुक्त देदीप्यमान सूर्य, महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर,कलश एवं ध्वजा विद्यमान है। चिह्न के मध्य में प्रफुल्लित पद्मपुष्प (कमल पुष्प), पद्मपत्र (कमल के पत्ते), वाम एवं दक्षिण दिशा की ओर मुख किये हुए हंसयुगल विद्यमान हैं जो कि निर्मल प्रवहमान जलधारा में स्थित हैं।

विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न भारतीय चिन्तनसरणि, उदात्तमनीषा, सत्संकल्प तथा दिव्यसंस्कार को अभिव्यञ्जित करता है। आभायुक्त सूर्य की दिव्य कान्ति सत्य एवं ज्ञान के प्रकाश तथा तप की द्योतक है। महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर श्रेष्ठता,उत्कर्ष एवं उन्नति तथा कलशज्ञानामृत के संग्रह एवं संरक्षण का परिचायक है। प्रवहमान ध्वजा उत्साह, ओज एवं प्रसार की सूचक है। प्रफुल्लित कमलपुष्प विविधता में एकात्मता के साथ समृद्धि, पवित्रता, सौन्दर्य तथा सुगन्धि का सन्देश दे रहा है। कमलपत्र निष्काम कर्मयोग एवं समर्पण भाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं। हंसयुगल सौम्यता, शुभ्रता, गुणग्राहिता, विवेकशीलता एवं ज्ञान-विज्ञान के परिचायक हैं तथा प्रवाहमान निर्मल जलधारा शास्त्रपरम्परा एवं संस्कृति को अविरल प्रवाहमान रखने, अग्रसारित करने एवं दोषरहित रखने की द्योतक है।

आदर्शवाक्य– विश्वविद्यालय का आदर्श एवं ध्येयवाक्य **''संस्कृतं नाम दैवीवाक्''** है। यह आदर्शवाक्य महाकवि दण्डीकृत काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद की 33वीं कारिका का प्रथम चरण है, जिसका भावार्थ है - "महर्षियों ने संस्कृतभाषा को दिव्यवाणी कहा है"। संस्कृत भाषा पूर्णत: शुद्ध, परिष्कृत, दोष रहित एवं संस्कार युक्त है, अत: दैवी (दिव्य) भाषा है, जिसके व्यवहार मात्र से व्यक्ति देवत्व को प्राप्त होता है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न स्वत: अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, परम्परा, उत्साह, समृद्धि, विवेक तथा संस्कृति के प्रवास का दिव्य समन्वय है।

लक्ष्य वाक्य

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के जनक और अधिष्ठाता यह संकल्प लेते हैं कि यह विश्वविद्यालय शास्त्रीय मर्यादा की रक्षा करते हुए देव भाषा संस्कृत तथा उससे निष्पन्न अन्य भाषाओं एवं उनके साहित्य, उनमें उपलब्ध प्राचीन ज्ञान के विशाल सागर जिसमें वैदिक साहित्य और वेदांग तथा उन पर विकसित सम्पूर्ण आगमिक साहित्य, प्राचीन विज्ञान जैसे आयुर्वेद, ज्योतिर्विज्ञान, भूमिति, गणित, रसायनशास्त्र, धातुशास्त्र, ऋतुविज्ञान, विमानशास्त्र, युद्धशास्त्र, अश्वशास्त्र, प्राचीन प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र तथा पंच भूतात्मक पर्यावरण से सम्बन्धित विज्ञान, स्थापत्य, वास्तुशिल्प, दृश्य, अभिनेय तथा श्रव्य कलाएँ, दण्डनीति तथा अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, प्राचीन प्रशासनिक एवं नैयायिक विधान, पारम्परिक इतिहास, सभ्यताओं के आरोह-अवरोह तथा दर्शन की सभी शाखाओं वैदिक-अवैदिक, भारतीय तथा पश्चिमी का संरक्षण, समुन्नयन एवं प्रचार-प्रसार करेगा, जिससे वैश्विक ज्ञान का क्षितिज विस्तृत हो एवं वर्तमान वैश्विक समाज के समक्ष सामाजिक और सारस्वत स्तर पर जो प्रश्न आज खड़े हुए हैं, उनके समुचित उत्तर प्राप्त हो सकें, जिससे स्पष्टतर दिशाओं के उद्घाटन से अधिक सामंजस्यपूर्ण जगत् एवं सुखी मानवता के लिये मार्ग प्रशस्त हो सके। इस प्रयोजन के लिये विश्वविद्यालय अपने परिसर में तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के माध्यम से वैश्विक मानदण्ड अपनाते हुए अध्ययन, अध्यापन और शोध सम्बन्धी सेवाएँ प्रदान करेगा।

विश्वविद्यालय की स्थापना एवम् आरम्भ

1. संस्कृत भाषा एवं प्राचीन ज्ञान-विज्ञान परम्परा के संरक्षण अभिवर्धन एवं उन्मुखीकरण के लिए मध्यप्रदेश की प्राचीन पौराणिक नगरी उज्जैन में मध्यप्रदेश शासन के संकल्प से संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस हेतु शासन द्वारा "महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008)" के अन्तर्गत 15 अगस्त 2008 को 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय' उज्जैन की स्थापना की गई।

2. स्थापना के उपरान्त दिनांक 17 अगस्त 2008 को मध्यप्रदेश राज्य के तत्कालीन मुख्यमन्त्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में तत्कालीन राज्यपाल एवं कुलाधिपति माननीय श्री डॉ. बलराम जाखड़ द्वारा विश्वविद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ किया गया। उज्जैन के देवास मार्ग स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर में शुभारम्भ विधि को सम्पन्न किया गया जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों सहित प्रशासन एवं गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

3. क्षिप्रांजलि न्यास की भूमि में स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर के भवन में किराया अनुबन्ध के आधार पर कक्षों को आवंटित कर विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्यालय दिनांक 17 अगस्त 2008 से विधिवत् प्रारम्भ किया गया। प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त स्थान की उपलब्धता के आधार पर अध्ययन-अध्यापन आरम्भ करने की दृष्टि से इसी भवन में छात्रों के उपयोग हेतु पुस्तकालय एवं शैक्षणिक कार्यों की गतिविधियाँ भी आरम्भ की गईं।

4. विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सुरम्य परिसर निर्माण एवं शैक्षणिक उपयोग के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा उज्जैन नगर के देवास मार्ग पर सीमान्त ग्राम मानपुरा/लालपुर में मुख्य मार्ग पर 10 हेक्टेयर (25 एकड़) भूमि का आवंटन किया गया। विश्वविद्यालय के लिए आवण्टित भूमि का अवलोकन एवं भूमि पूजन मध्यप्रदेश शासन के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री शिवराजसिंह चौहान के कर-कमलों द्वारा दिनांक 22 जनवरी 2009 को सम्पन्न हुआ।

5. विश्वविद्यालय की स्थापना के मूल सिद्धान्तों को विस्तारित करने के उद्देश्य से दिनांक 25.03.2010 को मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन के अधिनियम में 'एवं वैदिक' शब्द को जोड़ने के सम्बन्ध में संशोधन प्रस्ताव पारित किया गया। उक्त संशोधन पारित होने के उपरान्त इस विश्वविद्यालय का नाम 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय' के स्थान पर 'महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय' हुआ।

विश्वविद्यालय की अधोसंरचना एवं विकास कार्य

- विश्वविद्यालय की अधोसंरचना एवं विकास कार्यों के लिए मध्यप्रदेश राज्य शासन से भवन निर्माण, आर.सी.सी. एप्रोच रोड, विद्युतीकरण आदि सम्पूर्ण परिसर के विकास हेतु देवास मार्ग स्थित उज्जैन नगर के सीमान्त भाग में ग्राम मानपुरा/लालपुर में मुख्य मार्ग पर 10 हेक्टेयर भूमि का आवंटन किया गया है।
- भूमि का सर्वे कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् वास्तुविद् (आर्किटेक्ट) द्वारा विश्वविद्यालय की भूमि का परीक्षण कर अधोसंरचना विकास हेतु प्रकल्प विन्यास (Concept Planning), शिल्प विन्यास (Architectural Drawing) एवम् अधिविन्यास (Layout) तैयार किया गया है, जिसके अनुसार परिसर में निर्माण कार्य प्रस्तावित हैं।
- मध्यप्रदेश शासन के माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति जी के द्वारा दिनांक 18 जून 2010 को देवास मार्ग स्थित विश्वविद्यालय परिसर का विधिवत् शिलान्यास सम्पन्न किया गया।
- प्रारम्भिक तौर पर विश्वविद्यालय की अधोसंरचना विकास एवं स्थापना हेतु मध्यप्रदेश शासन द्वारा पाँच (5) करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गयी। उक्त राशि से विश्वविद्यालय परिसर में प्रारम्भिक निर्माण कार्य किए गये हैं, जिनमें भूमि विकास कार्य, आर.सी.सी. एप्रोच रोड, भूमि का समतलीकरण, परिसर की बाउन्ड्रीवॉल, यूटिलिटी ब्लॉक, पार्किंग शेड, शिक्षण हेतु पाँच कक्ष, पतंजलि छात्रावास आदि का निर्माण कार्य शासकीय निर्माण संस्था द्वारा पूर्ण किया जा चुका है।
- विश्वविद्यालय परिसर में अधोसंरचना विकास एवं निर्माण कार्यों के लिए रु. 68.5 करोड़ के अनुदान हेतु प्रस्ताव शासन के समक्ष प्रस्तुत किये गये थे। प्रथम चरण में रु.19 करोड़ का अनुदान स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा गया था जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सन् 2008 में मात्र रुपये 5 करोड़ का स्थापना अनुदान ही प्रदान किया गया था। शासन द्वारा प्रदान किये गये उक्त अनुदान के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के अधोसंरचना विकास व निर्माण कार्यों हेतु अन्य कोई भी अनुदान शासन द्वारा अभी तक प्रदान नहीं किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति एवं उनका कार्यकाल

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति के रूप में डॉ. मोहन गुप्त (IAS एवं पूर्व सम्भागीय कमिश्नर, उज्जैन) को नियुक्त किया गया था। तदुपरान्त अग्रिम वर्षों में अद्यावधि कार्यकाल पूर्ण करने वाले एवं वर्तमान माननीय कुलपतिगणों का विवरण अधोलिखित है –

क्र.	कुलपति का नाम	दिनांक से	दिनांक तक
1.	डॉ. मोहन गुप्त	17.08.2008	29.08.2011
2.	प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी	30.08.2011	11.02.2015
3.	प्रो. रमेशचन्द्र पण्डा	12.02.2015	11.02.2019
4.	प्रो. आशा शुक्ला (प्रभारी)	20.02.2019	08.03.2019
5.	डॉ. पंकज एल. जानी	08.03.2019	18.01.2021
6.	डॉ. अखिलेश कुमार पाण्डेय	19.01.2021	21.08.2021
7	प्रो. विजयकुमार सी.जी.	21.08.2021	निरन्तर

विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं उनका कार्यकाल

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन की स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलसचिव के रूप में डॉ.बी.एल. बुनकर को नियुक्त किया गया था। तदुपरान्त अग्रिम वर्षों में अद्यावधि कार्यकाल पूर्ण करने वाले एवं वर्तमान कुलसचिवों का विवरण अधोलिखित है –

क्र.	कुलसचिव का नाम	दिनांक से	दिनांक तक
1	डॉ.बी.एल. बुनकर	17.08.2008	10.06.2010
2	श्री मनोज कुमार तिवारी	10.06.2010	24.06.2015
3	श्री राकेश कुमार चौहान	01.09.2015	10.07.2018
4	श्री मनोज कुमार तिवारी	24.07.2018	13.03.2019
5	श्री एल.एस. सोलंकी	13.03.2019	12.01.2021
6	डॉ. प्रशान्त पुराणिक	13.01.2021	06.08.2021
7	डॉ. दिलीप सोनी	06.08.2021	निरन्तर

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में उपकुलसचिव के रूप में डॉ. ए.वी. राव पदस्थ रहे, जिन्होंने परीक्षा एवं प्रशासन के दायित्वों का निर्वहन किया।

विश्वविद्यालय के प्राधिकारी

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 की धारा 10 के अनुसार विश्वविद्यालय के प्राधिकारी निम्नलिखित हैं –

(1) साधारण परिषद्
(2) कार्यपरिषद्
(3) विद्यापरिषद्
(4) वित्त समिति, और
(5) ऐसे अन्य प्राधिकारी, जो विनियमों द्वारा विहित किये जायें।

साधारण परिषद्

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनिय 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 की धारा 11(1) के अनुसार विश्वविद्यालय की साधारण परिषद् का गठन किया गया है। जिसमें निम्नलिखित सदस्य हैं–

एक - पदेन सदस्य

(एक)	मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री	-	अध्यक्ष
(दो)	मध्यप्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग का भारसाधक मन्त्री	-	उपाध्यक्ष
(तीन)	मध्यप्रदेश सरकार के वित्त विभाग का भारसाधक मन्त्री	-	सदस्य
(चार)	विश्वविद्यालय का कुलपति		सचिव
(पाँच)	मध्यप्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग का प्रमुख सचिव/सचिव		सदस्य
(छ:)	मध्यप्रदेश सरकार के वित्त विभाग का प्रमुख सचिव/सचिव	-	सदस्य
(सात)	आयुक्त, उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश	-	सदस्य

दो - नामनिर्देशित सदस्य

(आठ) मध्यप्रदेश के संस्कृत महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से संस्कृत अध्यापक/आचार्य के छह प्रतिनिधि, जो संस्कृत में चर्चा या विचार-विमर्श में भाग लेने में समर्थ हों।

(2) खण्ड (आठ) के अधीन सदस्य राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किए जाएँगे।

विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 13 (1) उपधारा (2) तथा (3) के उपबन्धों के अध्यधीन रहते हुए साधारण परिषद् के सदस्यों की पदावधि चार वर्ष है।

वर्तमान में साधारण परिषद् में नाम निर्दिष्ट सदस्यों का कार्यकाल दिनांक 03/11/2015को पूर्ण हो चुका है। नवीन सदस्यों का नामनिर्देशन किया जाना प्रस्तावित है।

कार्यपरिषद्

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 की धारा 16 (1) के अनुसार विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् का गठन किया गया है। कार्यपरिषद् विश्वविद्यालय का मुख्य कार्यकारी निकाय है। विश्वविद्यालय का प्रशासन, प्रबन्धन तथा नियन्त्रण और उसकी आय, कार्यपरिषद् में निहित है, जो विश्वविद्यालय की सम्पत्ति तथा निधियों को नियन्त्रित और प्रशासित करती है। सत्रान्त में कार्यपरिषद् में निम्नलिखित स्वरूप में विद्यमान रही :-

क्र.	नाम	पता	पद
1	प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय	कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)	अध्यक्ष (चेयरमेन)
2	साधारण परिषद् के दो सदस्य	-	-
3	प्रमुख सचिव	उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन	पदेन सदस्य
4	प्रमुख सचिव	वित्त विभाग, मध्यप्रदेश शासन	पदेन सदस्य
5	डॉ.. मनमोहन उपाध्याय	निदेशक, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन	सदस्य
6	डॉ. उपेन्द्र भार्गव	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन	सदस्य
7	श्री हरीश मंगल (अनारक्षित प्रवर्ग)	बंगला न. 6, नूतन स्कूल के पास, प्रताप मार्ग, नीमच (म.प्र.)	सदस्य
8	डॉ. सुनीता थत्ते (अनारक्षित प्रवर्ग)	व्याख्याता (संस्कृत), शासकीय महाराजा शिवाजीराव उ.मा. विद्यालय इन्दौर	सदस्य
9	श्रीमती वन्दना नाफडे (अनारक्षित प्रवर्ग)	सहायक प्राध्यापक (संस्कृत),शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, इन्दौर	सदस्य
10	श्री भरत बैरागी (अन्य पिछड़ा प्रवर्ग)	यशोदा विहार, 97, त्रिमूर्ति नगर, साक्षी पेट्रोल पम्प के सामने,रतलाम	सदस्य
11	श्री कौशल मेहरा (अनुसूचितजाति प्रवर्ग)	86, कावेरी विहार,खण्डवा	सदस्य
12	श्री केसरसिंह चौहान (अनुसूचितजनजाति प्रवर्ग)	4, दीनदयाल पुरम कॉलोनी,दहाना जिला – धार (म.प्र.)	सदस्य
13	डॉ. प्रशान्त पुराणिक	कुलसचिव,महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन	सचिव

(विद्यापरिषद्)

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 2006 की धारा 23(1) के अन्तर्गत गठित 'विद्यापरिषद्' विश्वविद्यालय के शिक्षण, शिक्षा तथा परीक्षा मानकों पर नियन्त्रण रखती है। यह परिषद् विद्यासम्बन्धी प्रस्तावों पर विचार कर कार्यपरिषद् को अनुशंसा करती है।

वित्त समिति

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 2006 की धारा 26(1)के अन्तर्गत गठित 'वित्त-समिति' विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट का परीक्षण और उसकी संवीक्षा और वित्तीय मामलों में कार्यपरिषद् को अनुशंसाएँ करती है तथा नवीन व्ययों के लिए समस्त प्रस्तावों पर विचार कर कार्यपरिषद् को अनुशंसा करती है। यह विश्वविद्यालय की वित्त सम्बन्धी मामलों की प्रधान समिति है।

विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था

- महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन में शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक वर्ग की नियुक्ति हेतु दिनांक 31.08.2008 को स्टाफिंग पेटर्न शासन को भेजा गया था। इसमें 50 शैक्षणिक तथा 223 गैर शैक्षणिक पदों की स्वीकृति हेतु शासन के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।
- दिनांक 29.03.2010 को प्रमुख सचिव, वित्त विभाग के समक्ष उनके कक्ष में आयुक्त, उच्च शिक्षा विभाग, अपर सचिव, राजभवन तथा तत्कालीन कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की संयुक्त बैठक में 30 शैक्षणिक एवं 17 गैर-शैक्षणिक पदों हेतु वित्त विभाग, मध्यप्रदेश शासन ने स्वीकृति प्रदान की थी। तदनुसार उच्च शिक्षा विभाग के आदेश क्रमांक एफ-1-11/3-38, दिनांक 10/08/2010 द्वारा स्वीकृत पदों का विवरण निम्नानुसार है :-
- **शैक्षणिक-**

क्र.	पद का नाम	पद
1	प्रोफेसर	05
2	एसोसिएट प्रोफेसर	10
3	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	15
	कुल पद	**30**

- **गैर-शैक्षणिक-**

क्र.	पद का नाम	पद

1	कुलपति	01
2	कुलसचिव	01
3	वित्त अधिकारी (म.प्र. राज्य वित्त सेवा से)	01
4	स्टेनो	01
5	सहायक ग्रेड 3	03
6	भृत्य	04
7	सुरक्षाकर्मी एवं चौकीदार (कलेक्टर दर पर)	02
8	विश्वविद्यालय अभियंता (प्रतिनियुक्ति पर)	01
9	ड्रायवर	02
10	स्वीपर (कलेक्टर दर पर)	01
	कुल पद	**17**

उपर्युक्त सारणी में प्रदर्शित शैक्षणिक पदों पर में से 7 पदों की पूर्ति की जा चुकी है तथा शेष 23 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया प्रस्तावित है।

गैर शैक्षणिक पदों में से 7 गैर शैक्षणिक पदों पर नियुक्तियाँ की जा चुकी हैं। 02 पदों पर कुलपति एवं कुलसचिव कार्यरत रहे। मध्यप्रदेश राज्य वित्त सेवा से वित्त नियन्त्रक के पद पर सेवारत अधिकारी विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी के रूप में कार्यरत रहे। शेष पदों को पुनः विज्ञापित किया जाना प्रस्तावित है।

विश्वविद्यालय के विविध संकायों के अन्तर्गत संचालित विभागों में शैक्षणिक सत्र 2020-21 में निम्नलिखित प्राध्यापक कार्यरत हैं :-

क्र.	नाम	पद
1.	डॉ.. मनमोहन लाल उपाध्याय	निदेशक (प्रोफेसर)
2.	डॉ. तुलसीदास परौहा	ऐसोसिएट प्रोफेसर (साहित्य)
3	डॉ. श्रीमती पूजा उपाध्याय	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (भारतीय दर्शन)
4	डॉ. शुभम् शर्मा	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (ज्योतिर्विज्ञान)
5	डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (नव्यव्याकरण)
6	डॉ. उपेन्द्र भार्गव	असिस्टेन्ट प्रोफेसर(सिद्धान्त ज्योतिष)
7	डॉ. संकल्प मिश्र	असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शुक्लयजुर्वेद)

विश्वविद्यालय की माननीय विद्यापरिषद् एवं कार्यपरिषद् के निर्णय एवं मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग से स्वीकृति प्राप्त होने के उपरान्त विश्वविद्यालय में स्वीकृत 05 प्रोफेसर के पदों में से एक पद को संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण तथा ज्ञान विज्ञान संर्वधन केन्द्र के निदेशक (प्रोफेसर) के रूप में भरा गया। उक्त पद पर दिनांक 19.06.2018 से डॉ. मनमोहन लाल उपाध्याय निदेशक (प्रोफेसर) के रुप में कार्यरत हैं।

गैर-शैक्षणिक पदों में सहायक ग्रेड-3 पद हेतु 01,भृत्य पद हेतु 04 तथा वाहन चालक पद हेतु 02 कर्मचारी वर्तमान वर्ष में कार्यरत रहे। विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्य सुचारु रूप से चलाने हेतु राज्य शासन से स्वीकृत पदों के अतिरिक्त गैर- शैक्षणिक पद सृजित करने का अनुरोध किया गया है जिस पर शासन का निर्णय अपेक्षित है।

विश्वविद्यालय में प्रतिवेदनाधीन अवधि में प्रशासनिक व्यवस्था निम्नानुसार रही:-

क्र.	प्रशासनिक पद	अधिकारी का नाम	कार्यकाल की स्थिति
1.	कुलपति	डॉ. पंकज एल. जानी	08.03.2019 से 18.01.2021
		प्रो.अखिलेश कुमार पाण्डेय	19.01.2021 से निरन्तर
2.	उपकुलपति	प्रो. मनमोहन उपाध्याय	04.02.2019 से निरन्तर
3.	कुलसचिव	डॉ.एल.एस. सोलंकी	13.03.2019 से 12.01.2021
		डॉ.. प्रशान्त पुराणिक	13.01.2021 से निरन्तर
4.	वित्त नियन्त्रक	श्री एच. एस. गेहलोत	25.07.2019 से 30.09.2020
		श्री आदित्य नागर	से निरन्तर
5.	वि.क.अ.(OSD,परीक्षा)	डॉ. तुलसीदास परौहा	15.04.2019 से निरन्तर
6.	वि.क.अ.(OSD,वित्त)	डॉ. संकल्प मिश्र	15.04.2019 से निरन्तर

परिसर विकास की योजनाओं का वित्तीय अनुमान

राज्य शासन की नीति अनुरूप संस्कृत विश्वविद्यालय को उत्कृष्ट बनाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय की भवन निर्माण तथा परिसर विकास की योजनाओं का आँकलन किया गया तथा आवश्यकतानुसार समय-समय पर राज्यशासन को वित्तीय प्रावधान करने तथा विश्वविद्यालय को तदनुसार धनराशि सुविधानुसार उपलब्ध हो सके, इस परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालय परिसर में निर्माण तथा परिसर की आवश्यकता का प्रारम्भिक आँकलन विश्वविद्यालय के वास्तुविद् से कराया गया है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक सुविधाओं, स्टाफ की सुविधाओं, विद्यार्थियों की सुविधाओं तथा परिसर के विकास के लिये लगभग रुपये 42 करोड़ का प्रारम्भिक व्यय आँका गया है। प्रस्तावित भवन निर्माण तथा परिसर विकास की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नानुसार है:-

MAHARSHI PANINI SANSKRIT EVAM VEDIC VISHWAVIDHYALAYA, UJJIAN		
SUMMARY		
S. No.	**ITEM DESCRIPTION**	**AMOUNT**
1	ACADEMIC FACULTIES	41119160/-
2	ADIMINISTRATIVE BLOCK	15913640/-

3	AUDITORIUM	20860480/-
4	GUEST HOUSE	19005072/-
5	RESIDENTIAL QUARTERS	54792968/-
6	STAFF(OFFICE)	15792440/-
7	REGISTERAR BUNGALOW	5646560/-
8	VICE CHANCELLOR BUNGALOW	8415840/-
9	BOYS HOSTEL	45864690/-
10	GIRLS HOSTEL	13470120/-
11	LIBRARY & SEMINAR HALL	31082160.63/-
12	BHARAT KA RANGMANCH	6568650/-
13	VEDH SHALA	15536700/-
14	CLUB HOUSE	436130/-
15	DISPENCERY	1977345/-
16	CONVENIETNT SHOPPING	7258500/-
17	OPEN AIR THEATER	12605175/-
18	SWIMMING POOL	12459730/-
19	OUTER DEVELOPMENT	45106250/-
	TOTAL	**377836610.63/-**
	Add for Contingencies, Consultany, Work Charge Estabilishment @ 10.65%	**40239599.03/-**
	Grand Total	**418076209.66/-**
	Say Rs. In Cr.	**41.81/-**

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्गत मान्यता

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) नई दिल्ली अधिनियम की धारा 2 (f) के अधीन मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय द्वारा यू.जी.सी. की धारा 12 (बी) के अन्तर्गत मान्यता एवं आर्थिक अनुदान प्रदान करने के लिये पात्रता हेतु पत्र क्रमांक 2713, दिनांक 10 सितम्बर 2010 द्वारा आवेदन किया गया था। आर्थिक अनुदान की पात्रता प्रदान करने के लिये आयोग द्वारा शर्तें निर्धारित की गई हैं जिन्हें पूर्ण करने के उपरान्त ही विश्वविद्यालय को अनुदान प्राप्त हो सकेगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिनियम की धारा 12 (बी) में मान्यता प्राप्त होने के उपरान्त विश्वविद्यालय की विकासात्मक योजनाओं का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

विश्वविद्यालय के संकाय एवं विभाग

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 2006 क्र. 15 सन् 2008 की धारा 24 (तीन) एवं 33 (ञ) के अन्तर्गत् विनिर्मित परिनियम क्र. 15 के अनुसार प्रस्तुत प्रतिवेदन के सन्दर्भ में आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित संकायों का गठन किया गया है तथा उनके अन्तर्गत संचालित अधोनिर्दिष्ट विभागों में शिक्षण/अध्यापन कार्य जारी रहा:-

1. Veda Vedanga and Sahitya

1.1 वेद एवं व्याकरण विभाग

1.2 संस्कृत साहित्य एवं दर्शन विभाग

1.3 ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग

2. दर्शन संकाय

2.1 न्याय दर्शन विभाग

3. कला संकाय

3.1 विशिष्ट संस्कृत विभाग

4. प्राचीन विज्ञान संकाय

4.1 योग विभाग

5. शिक्षा संकाय

5.1 शिक्षाशास्त्र विभाग

6. संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण तथा ज्ञान विज्ञान संवर्धन केन्द्र

उपर्युक्त विभागों में सत्र 2020-21 में स्नातक स्तर पर शास्त्री/ बी.ए./ बी.ए. ऑनर्स/ बी.ए.बी.एड. एकीकृत तथा स्नातकोत्तर स्तर पर आचार्य/ एम.ए. तथा पत्रोपाधि (डिप्लोमा) पाठ्यक्रम तथा प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम की कक्षाएँ संचालित हो रही हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विनियम 2009 तथा संशोधित अनुसार विश्वविद्यालय में शोध एवं अनुसंधान पाठ्यक्रमों में विद्यावारिधि (पीएच्.डी.) संचालित है।

विश्वविद्यालय की विविध समितियाँ

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं विश्वविद्यालय, उज्जैन के प्रशासनिक, शैक्षणिक अकादमिक, वित्तीय एवं अन्य कार्यों के सुचारु रूप से संचालन एवं सम्पादन करने के लिए विश्वविद्यालय विनियमों/परिनियमों में विहित प्रावधान अनुसार प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए माननीय कुलपति महोदय द्वारा प्रशासनिक आदेशानुसार विविध समितियों का विधिपूर्वक गठन किया गया है, जिनका विवरण निम्नानुसार है-

1. **भवन समिति**
2. **आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)**
3. **क्रय समिति**
4. **मुद्रण एवं प्रकाशन समिति**
5. **छात्रावास स्थायी समिति**

6. **व्यथा निवारण समिति**
7. **महिला उत्पीड़न निवारण समिति**
8. **महिला विकास समिति**
9. **प्रवेश समिति**
10. **केन्द्रीय परीक्षा समिति**
11. **शोधोपाधि समिति (RDC)**
12. **विभागीय शोध समिति/शोध सलाहकार समिति**
13. **क्रीड़ा समिति**
14. **साहित्यिक समिति**
15. **आकादमिक समिति**
16. **सांस्कृतिक समिति**
17. **युवामहोत्सव आयोजन समिति**
18. **अनुसुचित जाति/जनजाति व्यथा निवारण समिति**
19. **ग्रन्थालयसमिति**

विश्वविद्यालय अध्यापन विभागों में संचालित पाठ्यक्रम वर्ष 2020-21

The list of Programmes offered in -2020-21 (22)

1. **PG – Programmes (Totoal Count - 11)**

Name of the Programme	Department	School
Acharya in Shuklayajurveda	Veda & Vyakarana	Veda Vedanga and Sahitya
Acharya in Navya Vyakarana	Veda & Vyakarana	Veda Vedanga and Sahitya
Acharya in Sahitya	Sanskrit Sahitya	Veda Vedanga and Sahitya
Acharya in Falitajyotisha	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya
Acharya in Siddhantajyotisha	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya
M.A. in Vastushastra	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya
M.A. in Jyotirvigyana	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya

Acharya in Nyayadarshana	Darshana	Veda Vedanga and Sahitya
Acharya in Advaitavedanta	Darshana	Veda Vedanga and Sahitya
M.A. in Sanskrit	Vishishta Sanskrit	Kala
M.A. in Yoga	Yoga	Prachin Vigyana

2. UG – Programmes (Total Count - 8)

Name of the Programme	Department	School
B.A. B.ED.	Education	Education
Shastri in Shukla Yajurveda	Veda & Vyakarana	Veda Vedanga and Sahitya
Shastri in Navya Vyakarana	Veda & Vyakarana	Veda Vedanga and Sahitya
Shastri in Sahitya	Samskrit Sahitya	Veda Vedanga and Sahitya
Shastri in Falita Jyotisha	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya
Shastri in Siddhanta Yyotisha	Jyotisha & Jyotirvijnana	Veda Vedanga and Sahitya
Shastri in Nyaya Darshan	Darshan	Veda Vedanga and Sahitya
B.A. Honours in Sanskrit	Vishishta Sanskrita	Kala

3. Ph.D. (in six subjects) (Total Count - 1)

शैक्षणिक सत्र 2020-21 में विश्वविद्यालय में संचालित अध्यापन विभागों के नियमित पाठ्यक्रमों में कुल 721 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश प्राप्त किया। इनमें 28 अनुसूचित जाति, 05 अनुसूचित जनजाति तथा 53 अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र थे।

वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार वर्तमान आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय संकायों के अंतर्गत संचालित विविध अध्यापन विभागों में अध्ययनरत स्नातक/स्नातकोत्तर तथा शोधोपाधि पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त छात्र-छात्राओं का विवरण अग्रिम पृष्ठ पर उल्लिखित है:-

द्वितीय दीक्षान्त समारोह

आलोच्य सत्र में विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह दिनांक 31 दिसम्बर 2020 को आयोजित किया गया। दीक्षान्त समारोह मध्यप्रदेश की माननीय राज्यपाल महोदया एवं कुलाधिपति श्रीमती आनंदी बेन पटेल जी की अध्यक्षता में, मध्यप्रदेश शासन के उच्चशिक्षा मन्त्री डॉ.. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में तथा सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गोपबन्धु मिश्र के सारस्वत आतिथ्य में पारम्परिक वेषभूषा में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह में विशिष्टातिथि के रूप में विधायक एवं पूर्व मन्त्री श्री पारस जैन तथा सांसद श्री अनिल फिरोजिया मञ्च पर उपस्थित रहे। राज्यपाल महोदया ने ऑनलाइन जुड़कर मार्गदर्शन दिया। उनके प्रतिनिधिरूप में आदरणीय डॉ. मोहन यादव, उच्च शिक्षा मन्त्री, मध्यप्रदेश शासन ने स्नातकों को उपाधि तथा पदक प्रदान किये। सत्र 2019-20 में विश्वविद्यालय के वेद वेदाङ्ग एवं साहित्य संकाय, कला संकाय, दर्शन संकाय, एवं प्राचीन विज्ञान संकायों के पाठ्यक्रमों को सफलता पूर्वक उत्तीर्ण करने वाले कुल 625 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गयीं। जिनमें से 9 छात्रों को पीएच् डी उपाधि प्रदान की गयी। कोरोना महामारी को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष समारोह में पंजीयन सीमित संख्या में ही स्वीकार किये गये। 102 छात्रों ने दीक्षान्त समारोह हेतु पंजीयन कराया। इस वर्ष 12-12 विद्यार्थियों को उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु क्रमशः स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रदान किये गये। सारस्वत अतिथि प्रो. मिश्र ने भी आनलाइन जुड़कर छात्रों को सम्बोधित किया।

कुलाधिपति महोदया ने अपने दीक्षान्त उद्बोधन में समस्त उपाधि प्राप्तकर्ता छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि छात्र समाजकल्याण में शिक्षा का प्रयोग करें एवं लक्ष्य प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहें। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा शास्त्रार्थ परम्परा के पुनर्जागरण हेतु प्रसन्नता व्यक्त की। छात्रों को आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि संस्कृतविद्या विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाती है। विश्वविद्यालय में डिग्री पाठ्यक्रमों के साथ ही डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षकों ने ग्रन्थ लिखे, यह अभिनन्दनीय है।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित उच्चशिक्षा मन्त्री डॉ. मोहन यादव ने शोध कार्य को महत्व देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के भौतिक विकास के लिए हम सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। इसी विचार को साकार करते हुए यथाशीघ्र विश्वविद्यालय के गरिमामयी स्वरूप के लिए शासन योजनारत है। सारस्वत अतिथि गोपबन्धु मिश्र जी ने कहा कि दीक्षान्त के बिना शिक्षा व्यर्थ है। शिक्षा और दीक्षा दोनों आवश्यक हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.. पंकज लक्ष्मण जानी ने कहा कि विगत सत्र से छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस वर्ष कोरोना महामारी के बाद भी नवप्रवेशित छात्रों की संख्या बढ़ना हमारे लिए प्रसन्नता की बात है।

एक साथ आठ पुस्तकों का हुआ विमोचन

डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के छात्रों को एक ही स्थान पर प्रामाणिक पाठ्य सामग्री प्राप्त हो, इस उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित ग्रन्थों के लेखन और प्रकाशन का संकल्प किया। विश्वविद्यालय के आचार्यों तथा देश के अन्य वरिष्ठ विद्वानों ने इन ग्रन्थों का लेखन किया। इनमें से सात ग्रन्थों का विमोचन दीक्षान्त समारोह में किया गया। **योगतत्त्वविमर्श, योग तथा स्वास्थ्य, पौरोहित्य प्रवेशिका, जन्मपत्री रचना विज्ञान, मुहूर्तशास्त्र, वास्तुशास्त्र परिचय** और **वास्तुविन्यास विधान,** इन पुस्तकों के साथ ही **प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक** पुस्तक का विमोचन भी हुआ।

पूर्व राज्यपाल श्री लालजी टण्डन के सम्मान में पुस्तक समर्पण

विश्वविद्यालय से प्रकाशित पुस्तक **प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक** विश्वविद्यालय परिवार की ओर से मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्रद्धेय श्री लालजी टण्डन को श्रद्धांजलिस्वरूप समर्पित की गयी। विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह में मध्यप्रदेश के तत्कालीन माननीय राज्यपाल श्री लालजी टण्डन ने प्राचीन भारतीय आचार्यों के ग्रन्थों में विद्यमान वैज्ञानिक चिन्तन और उनके आविष्कारों की ओर ध्यानाकर्षण कर इन्हें प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक कहा था। माननीय लालजी टण्डन ने प्रेरणा दी कि भारत के प्राचीन वैज्ञानिकों पर प्रामाणिक ग्रन्थ का लेखन करने हेतु संस्कृत विश्वविद्यालय सबसे उपयुक्त है। अतः इस पुस्तक को विश्वविद्यालय परिवार द्वारा अपने निवर्तमान कुलाधिपति आदरणीय श्री लालजी टण्डन के सम्मान में समर्पित किया गया।

विश्वविद्यालय के परिनियम, अध्यादेश एवं विनियम

महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 क्रमांक 15 सन् 2008 में विहित प्रावधानों के अनुरूप विश्वविद्यालय के 19 परिनियम, 20 अध्यादेश तथा 8 विनियम तैयार कराये गये हैं तथा उन्हें विश्वविद्यालय की साधारण सभा के अनुमोदन की प्रत्याशा में समन्वय समिति एवं समन्वय समिति की स्थायी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। समन्वय समिति के समक्ष रखा जाकर उनका परीक्षण कर लिया गया है और समन्वय समिति की बैठक दिनांक 02.09.2010 में उनको प्रस्तुत हुआ मान लिया गया है। साधारण सभा की विगत बैठक दिनांक 20.11.2012 में इनका अनुमोदन हो गया है। परिनियम, अध्यादेश एवं विनियम की सूची निम्नानुसार है:-

परिनियम (STATUTES)की सूची :-

1. Terms and conditions of service of the Vice-Chancellor.
2. Powers and dutiees of the Vice-Chancellor.
3. The Registrar- his emoluments and conditions of service, Powers and duties.
4. New pension scheme.
5. Convocation.
6. Honorary degree.
7. Admission of colleges/institutions to the privileges of the University and withdrawal there of.
8. College code.
9. Autonumous colleges.
10. Scales of pay of Professors, Readers and Lectures.
11. Administration of endowments.
12. Conditions of service for Unicersity empolyees.
13. Seniority of officers and employees of the University.
14. Appointent of examiners.
15. faculites and assignment of subjects to the Faculties.
16. Powers, functions, appointments and conditions of of service of Heads of the University Teching Departments/Institutes/Academic Units.
17. Building committee.
18. Establishment of University Teaching Departments & institution teaching posts.
19. Appointment of non-teaching employees.

अध्यादेश (ORDINANCES) की सूची

1. Admission of students to a college or University Teaching Department, transfer of students and maintenance of discipline.
2. Enrolment of students and their admission to courses of study.
3. Examinations (General)..
4. Conduct of examinations.
5. The conditions of the award of fellowships and scholarships.
6. Travelling allowance and daily allowance.
7. Semester system at postgraduate level.
8. Semester system at undergraduate lelel.
9. doctor or philosopy/Vidhya Varidhi.
10. Maintenance of discipline among the students and Proctorial Board.
11. Institution of Emeritus Professorship, Honorary Professorship and Adjunct Honorary Professorship.
12. Examination and other fees.
13. Grading system in the examinations.
14. Degrees, diplomas, certificates and other academic distinctions to be awarded by
    the University and qualifications for the same and the examinations leading to
    degree, diplomas and certioficates.
15. Qualifications and conditions of appointement of techers of the University Teaching Departments.
16. Master of Philosophy. (M.Phil)
17. Diploma Courese.
18. Bechalor of Arts (Prachya Paddhati) classice.
19. Master of arts (classics) (Prachya Paddhati)
20. **Shiksha Shastr (B.Ed)**

विनियमों (REGULATIONS)की सूची

1. Annual Report
2. Function and duties of Finance Officer
3. Other officers of the University – condition of service, powers and duties
4. Preparation and maintenance of academic seniority lists

5. Seniority of teachers of the University
6. Seniority of Heads of departments in in affiliated colleges
7. Academic Planning and Evaluation Board

उपाधि विवरण

विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् सन् 2009-10 से परीक्षाओं का आयोजन प्रारम्भ किया। इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण मध्यप्रदेश है। अतः प्रदेश के जो महाविद्यालय अपने-अपने क्षेत्र के विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध थे, इस विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् वे समस्त महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गये। सम्बन्धित विश्वविद्यालयों द्वारा जिन उपाधियों की परीक्षा आयोजित की जा रही थीं, उन्हीं उपाधियों की परीक्षाएँ इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित करना प्रारम्भ कर दिया। सम्प्रति इस विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है:-

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	पद्धति	अवधि
1	शास्त्री/ बी.ए.	वार्षिक पद्धति	तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम
2	शास्त्री शिक्षा शास्त्री (बी.ए.बी.एड. एकीकृत)	वार्षिक पद्धति	चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम
3	आचार्य/ एम.ए.	सेमेस्टर पद्धति	दो वर्षीय/चार सेमेस्टर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
4	पत्रोपाधि (डिप्लोमा)	वार्षिक पद्धति	एक वर्षीय पाठ्यक्रम
6	विद्यावारिधि (पीएच्.डी.)	-	यू.जी.सी. के नियमानुसार

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या					
	प्रबन्धन			**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त**	
वर्ष	शासकीय	गैर-शासकीय	कुल	12 (बी)	2 (एफ)
2019-20	09	11	20	03	04

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की सूची

1. शासकीय वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
2. शासकीय अभयानंद संस्कृत महाविद्यालय, कल्याणपुर, जिला-शहडोल (म.प्र.)
3. शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, भितरी, जिला- सीधी (म.प्र.)
4. शासकीय पुरुषोत्तम संस्कृत महाविद्यालय, खजुरीताल, जिला-सतना (म.प्र.)
5. शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, देवेन्द्रनगर, जिला- पन्ना (म.प्र.)
6. शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
7. शासकीय रामानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लालघाटी, भोपाल (म.प्र)
8. शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, रामबाग, इन्दौर (म.प्र.)
9. शासकीय मानमल मीमराज रुइया संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र)
10. नगर निगम श्री लोकनाथ शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, गोविन्दगंज, जबलपुर (म.प्र.)
11. श्री नारायण संस्कृत महाविद्यालय, कटनी (म.प्र.)
12. श्री गणेश दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, वर्णी भवन, सागर (म.प्र)
13. श्री रामनाम संस्कृत महाविद्यालय, अक्षयवट, चित्रकूट, जिला-सतना (म.प्र.)
14. श्री ऋषि कुमार संस्कृत महाविद्यालय, पीली कोठी, चित्रकूट, जिला-सतना (म.प्र.)
15. श्री राम संस्कृत महाविद्यालय, चित्रकूट, जिला-सतना (म.प्र.)
16. श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)
17. श्री रावतपुरा सरकार संस्कृत महाविद्यालय,रावतपुरा धाम, लहार,जिला भिंड (म.प्र.)
18. श्री गणेश संस्कृत महाविद्यालय, गढ़ाकोटा, सागर (म.प्र.)
19. श्री मधुकर शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, देवासमार्ग, उज्जैन (म.प्र.)
20. श्री आद्या एज्यूकेशनल इन्स्टीट्यूट, उज्जैन (म.प्र.)

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन म.प्र.

विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग

प्रवेश छात्र सूची 2020-2021

SL NO	PROGRAM	I	II	III	TOTAL
1.	Shastri	45	29	32	106
2.	B.A.	4	10	5	19
3.	TOTAL	49	39	37	

SL NO	PROGRAM	I	II	III	IV
1.	B.A. B.ED.	22	27	26	0

SL NO	PROGRAM	I	II	TOTAL
1.	ACHARYA	29	30	59
2.	M.A.	105	47	152
3.		134	77	

विश्वविद्यालय के शिक्षण-सहभागी-कार्यक्रम
सत्र 2020-21

- **संस्कृत सप्ताह**

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में दिनांक 31 जुलाई से 06 अगस्त 2020 तक संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत विशिष्ट व्याख्यान तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कोविड गाइडलाइन के अनुरूप समस्त कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किये गये। **प्रथम दिवस** उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मोहन यादव जी द्वारा की गयी। ऑनलाइन उपस्थिति रही। उद्घाटन सत्र के सारस्वत वक्ता श्री दिनेश कामत अखिल भारतीय संगठन मंत्री नई दिल्ली ने संस्कृत भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मनिर्भर बनने के लिए संस्कृत के ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। भारतवर्ष का वास्तविक अर्थ संस्कृत भाषा के माध्यम से जाना जा सकता है। गूगल मीट तथा फेसबुक के माध्यम से कार्यक्रम का लाइव प्रसारण हुआ जिसमें, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत जगत के विद्वान् जुड़े रहे। विश्वविद्यालय में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए माननीय कुलपति, उपकुलपति, कुलसचिव, विभागाध्यक्ष एवं अध्यापक गण उपस्थित रहे। विश्व विद्यालय के समस्त छात्र गूगल मीट के माध्यम से उपस्थित रहे। **द्वितीय दिवस** दिनाङ्क 1 अगस्त 2020 को श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर गोपबन्धु मिश्र ने **संस्कृतवाङ्गमये रोगाणां शमनोपायाः** इस विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय चिकित्सा विज्ञान तथा आयुर्वेद समस्त रोगों का निदान केंद्र है। चरक एवं सुश्रुत आज भी प्रासङ्गिक हैं। इसी दिवस सायङ्कालिक सत्र में राष्ट्रपति सम्मानित प्रोफेसर मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, पूर्व कुलपति महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय ने अमेरिका में रहते हुए गूगल मीट से **संस्कृतभाषासंरचनायां समाजनिरूपणम्** विषय पर स्वकीय व्याख्यान देते हुए कहा कि संस्कृत के ग्रन्थ सामाजिक जीवन जीने के लिए प्रकृति से प्रेरणा लेने को कहते हैं। **तृतीय दिवस** श्री वेंकटेश्वर संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति के पूर्व कुलपति प्रोफेसर के. देवनाथन ने **वेदोखिलो धर्ममूलम्** विषय पर व्याख्यान में कहा कि वेद सभी प्रकार के विज्ञान का तथा दर्शन के आधार हैं। सारस्वत अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के प्रोफ़ेसर हरिहर त्रिवेदी जी ने कहा कि वेदों की बातों को पुराण एवं स्मृति ग्रन्थ सरल तरीके से प्रतिपादित करते हैं। **चतुर्थ दिवस** संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली के सचिव श्री चमू कृष्ण शास्त्री ने **भाषा मूलं विकासस्य** विषय पर व्याख्यान में कहा कि संस्कृत भाषा में पर्याय शब्द पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं, अतः भारतवर्ष की प्रत्येक बोलियों में तथा भाषाओं में अधिकांश शब्द संस्कृत के हैं तथा कुछ शब्द संस्कृत के अपभ्रंश है। हमारा भारत देश परम्परा, नदी,पर्वत एवं संस्कृति का देश है। इन सब को बाँधने वाली भाषा एकमात्र संस्कृत है, अतः लोक भाषा को संस्कृत से अतिरिक्त नहीं समझना चाहिए। पञ्चम दिवस **रामो विग्रहवान् धर्मः** विषय पर सारस्वत अतिथि श्री रामानुजकोट

मन्दिर के महन्त श्री रङ्गनाथाचार्य जी ने श्री राम के विराट् स्वरूप का वर्णन किया। मख्यवक्ता श्रीवेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो के ई देवनाथन ने कहा कि अद्भुत धैर्य धारण करने के कारण राम को धर्म का प्रतीक माना जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस,भुवनेश्वर, उडीसा के कुलपति प्रो हरेकृष्ण शतपथी ने कहा की हमारा देश जिस चरित्र का अनुकरण तथा रमण करता है वह राम है। वास्तव भारत भूमि के नायक राम हैं जो कि विषम परिस्थिति में विचलित नहीं होते। **षष्ठ दिवस** डॉ मणि द्रविड, आचार्य, मेलापुर, चेन्नई ने **शास्त्रसंरक्षणोपायाः** विषय में आयोजित व्याख्यान में शास्त्र परम्परा से अध्ययन का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक विद्याओं का अध्ययन भी शास्त्रार्थ परम्परा से हो तो वह अधिक सार्थक होगा। सप्तम दिवस दिनाङ्क 6 अगस्त 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित संस्कृत सप्ताह समारोह का समापन विश्वविद्यालय की कुलाधिपति आदरणीया श्रीमती आनंदीबेन पटेल, माननीय राज्यपाल मध्यप्रदेश के द्वारा हुआ। माननीय राज्यपाल जी का स्वागत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी ने किया।

माननीय राज्यपाल जी ने महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय तथा संस्कृत महाविद्यालयों के आचार्यों की संस्कृत सेवा की सराहना करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा संस्कार एवं संस्कृति की मूलाधार तत्त्व है, यह भारत की आत्मा है, अतः सभी को संस्कृत पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए। नई शिक्षा नीति में विश्वविद्यालय शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किया गया है तथा शिक्षा जन जन तक पहुँचे इसके लिए नई शिक्षा नीति अवश्य ही कारगर होगी। वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण तकनीकी का पर्याप्त उपयोग देखा गया है। अतः शिक्षा के लिए तकनीकी के सभी आयामों का उपयोग होना चाहिए। इसके लिए मैं शोधकर्ताओं को आमंत्रित करती हूँ। शारीरिक एवं मानसिक समृद्धि के लिए योग का सतत अभ्यास करना चाहिए। अतः सभी शैक्षणिक संस्थाओं में योग का अभ्यास होना चाहिए। संस्कृत सप्ताह समारोह में विश्वविद्यालय तथा मध्यप्रदेश के समस्त संस्कृत महाविद्यालयों के छात्र एवं छात्राएँ 4 विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागी बने। समस्त कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र गूगल मीट तथा फेसबुक आदि के माध्यम से जुड़े।

वेदपूजन

दिनाङ्क 03/08/2021, रक्षाबन्धन को संस्कृत दिवस के अवसर पर शासकीय संस्कृत महाविद्यालय इंदौर के आचार्य डॉ विनायक पाण्डेय जी के संयोजन में वेद-पूजन के कार्यक्रम में सभी ऑनलाइन जुड़कर साक्षी बने।

संस्कृत प्रतियोगिताएँ

संस्कृत सप्ताह में विभिन्न दिवसों में प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन आयोजित हुई। **काव्यपाठ** में कनिष्ठवर्ग में स्नेहा शर्मा एवं दामिनी मोरे ने प्रथम

प्रिया जोशी ने द्वितीय तथा अपूर्वा उपाध्याय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग में पूजा गौर, आशीष दवे तथा शिवशङ्कर चौबे ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किये। **पाणिनिसूत्रपाठ** में कनिष्ठवर्ग में स्नेहा शर्मा, दामिनी मोरे तथा जितेन्द्र शर्मा ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किये। वरिष्ठ वर्ग में पूजा गौर, दर्शना शर्मा तथा आशीष दवे ने स्थान प्राप्त किये। **संस्कृतगीत कनिष्ठवर्ग में** जितेन्द्र शर्मा, स्नेहा शर्मा तथा सोनिया मुद्गल एवं वरिष्ठ वर्ग में रुचित द्विवेदी, सन्दीप सिंह तथा पूजा गौर ने विविध स्थान प्राप्त किये। **संस्कृतभाषण कनिष्ठवर्ग** में अक्षत जोशी, जितेन्द्र शर्मा तथा प्रिया जोशी एवं वरिष्ठ वर्ग में पूजा गौर, हेमन्त पण्ड्या तथा रज्जन पटेल ने क्रमशः स्थान प्राप्त किये।

- **स्वतन्त्रता दिवस समारोह**

दिनाङ्क 15/08/2020 को विश्वविद्यालय परिवार द्वारा स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. पंकज लक्ष्मण जानी ने ध्वजारोहण के उपरान्त विश्वविद्यालय परिवार को सम्बोधित किया।

- **स्थापना दिवस समारोह**

दिनांक 17 अगस्त 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय का 13 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के समस्त संस्कृत महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के समस्त विभाग ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। विश्वविद्यालय परिसर में माननीय कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय, विभागाध्यक्ष डॉ तुलसीदास परौहा तथा अध्यापक गण की उपस्थिति में वैदिक मंगलाचरण तथा दीप दीपन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर 13 औषधीय पादपों का रोपण किया गया। कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी जी ने कहा कि नई शिक्षा नीति में संस्कृति, संस्कार एवं राष्ट्र का पर्याप्त ध्यान रखा गया है। शिक्षा जन जन तक पहुँचे तथा छात्र गण किसी भी विषय का ज्ञान कर सकें इस उद्देश्य से हम अपने विश्वविद्यालय को परिष्कृत कर रहे हैं। कुलपति जी ने पूर्व कुलपतियों का स्मरण किया। उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय जी ने कोरोना संक्रमण को ध्यान में रखकर अध्ययन अध्यापन को विकसित करने के लिए अध्यापकों को प्रेरित किया। विभागाध्यक्ष डॉक्टर तुलसीदास परौहा ने विश्वविद्यालय की भावी रणनीति से से समसदत महाविद्यालयों को अवगत कराया। इस कार्यक्रम में समस्त अध्यापक छात्र गण एवं कर्मचारी प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।

- **शैक्षणिक भवनों हेतु भूमि पूजन**

दिनांक 31 अगस्त 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन में योगेश्वर श्रीकृष्ण योग भवन तथा आचार्य सांदीपनि शिक्षा भवन के लिए भूमि पूजन तथा शिलान्यास समारोह विश्वविद्यालय की माननीय कुलाधिपति तथा मध्यप्रदेश की माननीय राज्यपाल आदरणीया श्रीमती आनंदीबेन पटेल की गरिमामयी अध्यक्षता में तथा मध्यप्रदेश के माननीय उच्च शिक्षा मन्त्री

आदरणीय डॉ मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम गूगल मीट के माध्यम से वर्चुअल किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी, उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव डॉ एल एस सोलंकी, विभागाध्यक्ष डॉ तुलसीदास परोहा सहित प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र सम्मिलित हुए।

स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी ने माननीय राज्यपाल महोदया के तथा माननीय मन्त्री जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कुलपतिजी ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों, आगामी कार्य योजनाओं तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण योग भवन एवं आचार्य सांदीपनि शिक्षा भवन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। माननीय राज्यपाल महोदया ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय में पारम्परिक पाठ्यक्रमों के साथ योग की शिक्षा विद्यार्थियों की गुणवत्ता में वृद्धि करेगी। सर्वांगीण विकास के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति परम आवश्यक है। विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रम जो ऑनलाइन संचालित किए जा रहे हैं, वे छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उपकारक सिद्ध होंगे। समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि उज्जैन नगरी से संस्कृत विश्वविद्यालय का तादात्म्य संबंध है। वेदों तथा पुराणों में अपूर्व ज्ञान-विज्ञान का भण्डार निहित है। मुझे विश्वास है कि संस्कृत विश्वविद्यालय के माध्यम से यह ज्ञान रूपी अमृत समाज को प्राप्त होगा। जिस तरह महर्षि सान्दीपनि से 64 प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर श्री कृष्ण पुरुषोत्तम हुए। ठीक उसी प्रकार यहाँ के छात्र श्रेष्ठ मानव सिद्ध होंगे।

- **हिन्दी दिवस**

दिनांक 14 सितंबर 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जानी जी ने की। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम का संयोजन विश्वविद्यालय के छात्रों के द्वारा किया गया। छात्रों ने स्वरचित विविध कविताओं का पाठ किया। शोध छात्रों ने व्याख्यान प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के समापन में विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने भी विचार व्यक्त किये। उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव डॉ. एल एस सोलङ्की, विभागाध्यक्ष डॉ तुलसीदास परौहा ने भी छात्रों का मार्गदर्शन किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपतिजी ने हिन्दी के प्रचारप्रसार में लगे अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वानों का स्मरण किया और छात्रों को उनके व्याख्यान और कविताओं की प्रशंसा की।

- **प्रधानमंत्री जी का जन्मदिवस में सङ्गोष्ठी एवं वृक्षारोपण**

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय देवास मार्ग उज्जैन में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 16 एवं 17 सितंबर 2020 को लीडरशिप पर केंद्रित संगोष्ठी एवं 71 औषधीय पौधों का रोपण किया गया। दो दिवसीय आयोजन के प्रथम दिवस माननीय कुलपति डॉ पंकज लक्ष्मण जाने जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के मध्य

लीडरशिप पर केंद्रित सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए माननीय कुलपति जी ने प्रधानमंत्री जी के साथ अपने संस्मरण सुनाए तथा कहा कि आदरणीय मोदी जी **मैं नहीं हम** के सिद्धान्त पर कार्य करते हैं। सङ्गोष्ठी को उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय, विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा, डॉ पूजा उपाध्याय, डॉ. अखिलेश द्विवेदी, डॉ उपेन्द्रभार्गव, डॉ शुभम शर्मा, डॉ सङ्कल्प मिश्र आदि ने सम्बोधित किया। द्वितीय दिवस 17 सितंबर 2020 को 71 पौधे परिसर में लगाए गे। मुख्य अतिथि श्री अशोक कडेल समेत विश्वविद्यालय परिवार नेरोपण कार्य किया।

- **नैक प्रक्रिया पर कार्यशाला**

दिनाङ्क 9/11/2020 को संस्कृत विश्वविद्यालयों हेतु राष्ट्रिय मूल्याङ्न प्रत्यायन परिषद् (NAAC) की मूल्याङ्कन प्रक्रिया पर एक दिवसीया कार्यशाला आयोजित की गयी। इसके प्रथम सत्र में मुख्यवक्ता डॉ. तुलसीदास परौहा ने नैक मूल्याङ्कन के सात बिन्दुओं में से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। नमनीयता को डॉ. परौहा ने हिन्दी साहित्य में बोली के प्रश्नपत्र में दिये मालवी, बघेली, बुन्देली के विकल्पों से समझाया।

द्वितीय सत्र में प्रो रमाकान्त पाण्डेय का व्याख्यान हुआ। व्याख्यान के प्रारम्भ में प्रो पाण्डेय ने कहा कि संस्कृत संस्थाओं के मूल्याङ्कन के विषय में गठित समिति ने कहा कि यहाँ की समस्याएँ, संरचना आदि सबसे भिन्न होने से संस्कृत विश्वविद्यालयों हेतु नवीन नियम बनें। क्योंकि संस्कृत मात्र भाषा नहीं। हम पूरी परम्परा को सहेजते हैं। मूल्याङ्कन की पूरी प्रक्रिया संस्कृत विश्वविद्यालयों हेतु नये आयामों में निर्धारित की गयी है। प्रो पाण्डेय ने सविस्तार इन पर प्रकाश डाला।

- **विवेकानन्द जयन्ती-युवा दिवस**

आज दिनांक 12 जनवरी 2021 को विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म दिवस (राष्ट्रीय युवा दिवस) के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति डॉ. पंकज लक्ष्मण जानी जी ने की तथा विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० मनमोहन उपाध्याय, विभागाध्यक्ष डॉ तुलसीदास परौहा तथा योग विभाग समन्यक डॉ पूजा उपाध्याय सहित विश्वविद्यालय के अन्य शिक्षक गण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में कुल 22 छात्र-छात्राओं ने गूगलमीट ऐप के माध्यम से ऑनलाइन भाग लिया तथा कार्यक्रम के विषय **स्वामी विवेकानंद जी का दार्शनिक चिन्तन** पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जितेन्द्र शर्मा तथा आभास शर्मा, द्वितीय स्थान कृतिका जोशी तथा तृतीय स्थान दामिनी मोरे ने प्राप्त किया।

- **गोदग्राम में जनजागरुकता**

दिनांक 16/01/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन की **राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई** के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए दोनों ग्राम, **चंदेसरी (प्रेम नगर)** में मध्यान्ह 11:30 बजे से तथा **ग्राम मानपुरा** में अपरान्ह 2:30 बजे से जागरुकता कार्यक्रम

आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कोरोना से बचाव के उपायों को गम्भीरता से अपनाने पर बल दिया गया तथा वैक्सीनेसन अपनाने के लिए भी स्थानीय ग्रामीणों को प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के विश्वविद्यालय इकाई प्रभारी डॉ उपेन्द्र भार्गव ने इस सम्बन्ध में विस्तृत विषयवस्तु प्रस्तुत करते हुए आयोजन का उद्देश्य बताया। इस अवसर पर व्याकरण विभाग के प्राध्यापक डॉ अखिलेशकुमार द्विवेदी, डॉ धर्मेन्द्र शर्मा आदि ने भी मार्गदर्शन प्रदान किया तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानियों से अवगत कराते हुए, इन्हें अत्यावश्यक रूप से तब तक अपनाने का अनुरोध किया जब तक वैक्सीन नहीं लग जाती। उपस्थित जनसमुदाय ने बताये गये निर्देशों का पालन करने का आश्वासन दिया तथा राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के प्रयासों की सराहना की।

इसी के साथ ही दोनों ग्राम पंचायत क्षेत्रों में स्थित **प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण की स्थिति** पर भी चर्चा की गई तथा ग्रामीण सामाजिक स्तर पर संस्कृत शिक्षा, संस्कार शिक्षा व नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया गया। ग्रामीणों द्वारा इसका समर्थन करते हुए नवीन पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु संस्कृत अध्ययन की आवश्यकता तथा महत्ता पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम में डॉ पुष्पेन्द्र जोशी, डॉ विनोद पाण्डेय, चंदेसरी पंचायत सचिव श्री मलखान सिंह चौहान, मानपुरा पंचायत सह सचिव श्री शेरसिंह तथा मानसिंह, दारासिंह चौहान, सुनील शर्मा, राजेश मालवीय, राहुल बागवान, अनिल बागवान, शान्तिलाल, चेतन चौधरी, सुन्दरलाल चौधरी, रंजीत सिंह, भँवर सिंह, विजय सिंह, प्रीतम परमार, मेहरबान सिंह, मिश्रीलाल, राजेश राव, सूरज सिंह, आनन्दीलाल, गोकुल सिंह, विक्रम सिंह, केसर सिंह आदि अन्य स्थानीय ग्रामीण उपस्थित रहे।

- **गणतन्त्र दिवस**

दिनाङ्क 26/01/2021 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश पाण्डेय द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव प्रो. प्रशान्त पुराणिक, विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा, वित्तनियन्त्रक श्री आदित्य नागर समेत विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक तथा कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. शैलेन्द्र शर्मा उपस्थित थे। ध्वजवन्दन के उपरान्त विश्वविद्यालय परिवार को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. पाण्डेय ने कहा कि हमारे संस्कृत क्षेत्र में गणतन्त्र की अवधारणा कोई नवीन बात नहीं है। वैदिक काल में ही गणतन्त्र का स्वरूप स्पष्ट हो चुका था। हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण एवं महाभारत भी गणतन्त्र की ओर सङ्केत करते हैं। राम निषाद को मित्र बनाते हैं, तो शबरी के प्रेम भरे बेर खाते हैं। वानर-भालुओं की सेना से युक्त राम का रावण से यद्ध वास्तव में गणतन्त्र का राजतन्त्र के विरुद्ध युद्ध था। महाभारत में भी जननायक युधिष्ठिर को अधिकार दिलाने स्वयं श्रीकृष्ण गणतन्त्र के योद्धा अर्जुन के सारथी बनते हैं। संस्कृत मात्र एक भाषा नहीं है, विश्व

के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। संस्कृत हमारी संस्कृति की ध्वजवाहिका है। आज कोविड काल में हमारे वैज्ञानिकों की सतत साधना से वैक्सीन बनीं, कुछ देश अपनी वैक्सीन को आय का उत्तम स्रोत बना रहे हैं, जबकि भारत की भावना वसुधैव कुटुम्बकम् की है। विज्ञान निर्माणकारी भी हो सकता और विनाशकारी भी, संस्कृत ही यह बता सकती कि हमें निर्माण का पथ अङ्गीकार करना है। हमारा विश्वविद्यालय निश्चय ही अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करेगा। अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो पाण्डेय ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

- **पर्यावरण संरक्षण पर परिचर्चा**

दिनाङ्क 29/01/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में पर्यावरण संरक्षण पर परिचर्चा आयोजित की गयी। परिचर्चा में अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पाण्डेय ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण का चिन्तन तो हमारी संस्कृति के मूल में है। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय प्रकृति की गोद में फला-फूला है। विश्व को पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देने वाले हमारे इसी संस्कृत जगत् के पूर्वज रहे होंगे। आज यदि हम स्वयं एक निश्चय करें कि घर से जो पेयजल लाते हैं, सायङ्काल शेष जल को वापस ले जाने की बजाय एक पौधे की प्यास बुझाएँ। यदि एक जलपात्र अतिरिक्त केवल पौधों के निमित्त लाएँ, तो यह कितने पुण्य का कार्य होगा, यह हम सब जानते हैं। उपकुलपति प्रो. मनमोहन उपाध्याय ने कहा कि न केवल वैदिक, अपितु पौराणिक साहित्य एवं महाकाव्य आदि में भी पर्यावरणसंरक्षण की ओर स्पष्ट सङ्केत हमारे संस्कृत जगत् के प्रकृतिप्रेम को दर्शाता है। कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक ने कहा कि हम सब मिलकर सर्वप्रथम अपने परिसर से ही पर्यावरण संरक्षण का कार्य प्रारम्भ करेंगे। कार्यक्रम में वित्तनियन्त्रक श्री आदित्य नागर ने भी निरन्तर सबको प्रेरित करने में विश्वविद्यालय की भूमिका को स्पष्ट किया। परिचर्चा के संचालक विभागाध्यक्ष डॉ.. तुलसीदास परौहा ने कहा कि हमारे ग्रन्थों में एक वृक्ष दस पुत्र के समान कहा गया है। विश्वकल्याण की भावना के साथ परिचर्चा का समापन हुआ।

- **शहीद दिवस**

दिनाङ्क 30/01/2021 को महात्मा गांधी की पुण्य तिथि शहीद दिवस के अवसर पर कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पाण्डेय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिवार द्वारा गांधीजी के सम्मान में दो मिनिट मौन रखकर उनके चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित की। इस सभा में विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो आर.सी. वर्मा, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. शैलेन्द्र शर्मा, पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव प्रो प्रशान्त पुराणिक उपस्थित रहे। कुलपति प्रो अखिलेशकुमार पाण्डेय ने कहा कि आत्मनिर्भरता, स्वदेशी आदि विचार गांधीजी ने उस समय कहे, यह उनकी दूरदृष्टि थी। गांधीजी सदैव पर्यावरण संरक्षण की बात करते थे। कुलपति प्रो पाण्डेय ने विश्वविद्यालय परिवार को मद्यनिषेध के पालन तथा प्रचार की शपथ दिलाई।

- **राष्ट्रीय महिला आयोग सदस्य श्रीमती कुन्दर द्वारा निरीक्षण**

दिनाङ्क 08/02/2021 को राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य श्रीमती श्यामला एस कुंदर, उडुपी, कर्नाटक ने महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में निरीक्षण किया। श्रीमती श्यामलाजी महिला आयोग के टूर प्रोग्राम के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों में आई. सी. (इंटरनल कमिटी) तथा महिलासम्बन्धी कानूनों (विमन रिलेटेड लाॅ) के सम्बन्ध में जागरुकता का कार्य कर रही हैं। विश्वविद्यालय में श्रीमती कुन्दर ने विश्वविद्यालय की आईसी समिति के सदस्यों, विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक तथा छात्र-छात्राओं से चर्चा की। विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव डॉ.. प्रशान्त पुराणिक ने विश्वविद्यालय की योजनाओं और कार्यों से अवगत कराया। विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों का परिचय प्रस्तुत कर यहाँ के संस्कारयुक्त पारिवारिक परिवेश का परिचय दिया।

श्रीमती कुन्दर ने संदेश दिया कि पाणिनि शब्द बचपन से ही कहीं ना कहीं उन से जुड़ा हुआ था। वे बहुत सारे संस्कृत अभियानों से जुड़ी रहीं साथ ही गुरुकुल पद्धति से भी उनका सदैव से आकर्षण रहा है, अतः सर्वप्रथम इसी विश्वविद्यालय को जानने की इच्छा हुई। पाणिनि विश्वविद्यालय के पारम्परिक वातावरण को देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुईं। चर्चा में उन्होंने बताया कि सभी विश्वविद्यालयों में महिलासम्बन्धी आन्तरिक समिति अवश्य हो तथा कार्यस्थल पर महिलासम्बन्धी कानूनों के विषय में जागरुकता कार्यक्रम होने चाहिए। सभी महिलाओं एवं छात्राओं को वन स्टॉप सेंटर के बारे में पता होना चाहिए। वन स्टॉप सेंटर में पीड़ित महिला हेतु मेडिकल, पुलिस, लीगल एवं तात्कालिक आवास की सुविधा उपलब्ध होती है। उन्होंने सरकार की लाड़ली लक्ष्मी योजना की प्रशंसा की। 181 हेल्पलाइन नंबर के विषय में जानकारी साझा की। सदस्यों को निर्देश देते हुए कहा कि 2 महीने में लगभग एक बार सामूहिक बैठक हो इस पर विशेष जोर दिया। दर्ज की गई शिकायतों पर मेंबर कमेटी किस तरह से विचार विमर्श करें और रिपोर्ट कैसे तैयार करें लीगल लॉयर से अवेयरनेस किस तरह से की जाए इस विषय पर अपने विचार साझा किए।

विश्वविद्यालय की शिक्षिका सदस्यों ने बताया कि समस्याएँ होती हैं? जिनका समाधान किसी माता पिता की तरह ही शिक्षक करते हैं। श्यामला जी ने संस्कार और संस्कृत वातावरण का लाभ देख कर कर कहा कि संस्कारशिक्षा सर्वप्रथम आवश्यक है, क्योंकि यह नींव है और नींव का मजबूत होना अत्यावश्यक है। श्रीमती कुन्दर ने छात्राओं तथा छात्रों से सीधे संवाद किया। इस अवसर पर डॉ. उपेन्द्र भार्गव, डॉ. रूपाली सारये, श्रीमती प्रीति उपाध्याय, सुश्री रामकुमारी, डॉ. शुभम् शर्मा सहित शिक्षक तथा छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

- **वसन्तोत्सव**

दिनाङ्क 16/02/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में वसन्तपञ्चमी के अवसर पर भगवती सरस्वती की पूजन के साथ वसन्तोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत काव्यपाठ तथा भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। काव्यपाठ में अक्षत जोशी ने

प्रथम तथा कुणाल श्रोत्रिय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में जितेन्द्र शर्मा ने प्रथम तथा अक्षत जोशी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो अखिलेशकुमार पाण्डेय तथा मञ्चस्थ अतिथियों ने छात्रों को पुरस्कार वितरित किये। छात्रों को शुभकामना प्रेषित कर कुलपति प्रो पाण्डेय ने कहा कि वसन्तपञ्चमी ऋतु परिवर्तन का दिवस है। इस दिन प्रकृति भी हँसती है। मुख्यातिथि प्रो शैलेन्द्र शर्मा ने माँ सरस्वती के स्मरण करते बताया कि उज्जैन को सरस्वती नदी सभ्यता को खोजने का श्रेय है। यहीं के पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर ने सभ्यता खोजी। वैदिक नदीमातृका सरस्वती वाग्देवी बनीं। मुख्यवक्ता डॉ. रमण सोलंकी ने कहा कि उज्जैन कला की भूमि क्योंकि यहीं श्रीकृष्ण ने अध्ययन किया, अङ्कपात पर वसन्तपञ्चमी को उनका दीक्षान्त हुआ, इसके पुरातात्त्विक प्रमाण हैं। चण्डप्रद्योत के समय वसन्तोत्सव इसी भूमि पर हुआ। 6ठीं शती ईसापूर्व की हाथी पर बैठे स्त्री पुरुष की प्रतिमा, उदयन और वासवदत्ता की कथा के आधार पर होना, उस काल का पुरातात्त्विक प्रमाण है। मौर्यकाल, शुङ्गकाल, विक्रमकाल से भोज के समय तक वसन्तोत्सव की परम्परा को बताते हुए डॉ. सोलंकी ने वाग्देवी, सरस्वतीकण्ठाभरण पाठशाला का उल्लेख कर महाकाल परिसर में भी प्राचीन संस्कृत पाठशाला के प्रमाणों की चर्चा की। विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा ने कहा कि वसन्तोत्सव के पर्याप्त प्रमाण साहित्य में मिलते हैं। प्राचीन वसन्तोत्सव के दो रूप रहे सारस्वत समर्चा एवं मदनोत्सव। आज वसन्तपञ्चमी को सरस्वती पूजन के अन्तर्गत पुस्तक पूजन का विधान है। कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक ने कहा कि कतिपय इतिहासकार कर्मकाण्ड को हिन्दूधर्म के पतन का कारण बताते हैं, हमें इस मिथक को तोड़ने हेतु माननीय कुलपतिजी के कहे अनुसार कार्य करना है। वाकणकरजी को स्मरण करते हुए डॉ. पुराणिक ने कहा कि उनके नेतृत्व में 30 विद्वानों के दल ने सरस्वती नदी के साथ सभ्यता खोजी। आज पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी सभ्यता स्वीकार कर ली गयी है। पाठशाला ही वाग्देवी के मन्दिर होते हैं। श्री पुराणिक ने ऐसी अनेक प्राचीन पाठशालाओं के पुरातात्विक प्रमाणों की चर्चा की। छात्रों की भौतिक उपस्थति 42 रही। अनेक छात्र ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

- **राष्ट्रीय शोधसङ्गोष्ठी**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं का क्रियान्वयन

उद्घाटन सत्र

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं का क्रियान्वयन** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी का शुभारम्भ देवास रोड स्थित परिसर में हुआ। शुभारम्भ करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने कहा कि भाषा संस्कृति एवं परम्परा की वाहिका होती है। बिना भाषा संस्कृति नहीं होती। भाषा सम्पर्क, शिक्षा या विकास का माध्यम न होकर सम्पूर्ण मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में लगभग 200 भाषाएँ लुप्त

हो गयी हैं। भाषा का लुप्त होना संस्कृति सभ्यता एवं विरासत का लुप्त होना है। श्री कोठारी ने अपने संबोधन में कहा कि नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र में लाया गया है। इस नीति को लागू करने के लिए नेतृत्व हमें करना चाहिए। शिक्षा नीति समाज की है, सरकार की नहीं। नीति को समाज तक पहुँचाने का काम हमारा है। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य भारतीय भाषा मञ्च की संयोजक प्रो. प्रेमलता चुटैल ने प्रस्तुत किया। न्यास के प्रान्तीय संयोजक डॉ. राकेश ढण्ड ने विषय प्रस्तावना प्रस्तुत की। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय ने नई शिक्षा नीति एवं भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वाणी के बिना शरीर की सुन्दरता अधूरी रहती है, इसी प्रकार भाषा के बिना शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. पूजा उपाध्याय ने किया। कृतज्ञताज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक द्वारा किया गया। डॉ. पुराणिक ने कहा कि श्री अतुल कोठारी जैसे राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् का मार्गदर्शन मिलना हम सबके लिए गौरव का विषय है।

इसके उपरान्त दो समानान्तर तकनीकि सत्र आयोजित किये गये। उच्च शिक्षा तथा शालेय शिक्षा से सम्बद्ध प्राध्यापकों/शिक्षकों/विद्यार्थियों ने स्वकीय सत्रों में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये।

तकनीकि सत्र

उच्च शिक्षा

इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. राममोहन शुक्ला, संभाग संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, उज्जैन सम्भाग ने की। सत्र का सञ्चालन शासकीय माधव महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. नीरज सारवान ने किया।

तकनीकि सत्र

शालेय शिक्षा

इस सत्र की अध्यक्षता श्री बी. के. शर्मा, प्राचार्य शिक्षा महाविद्यालय ने की। विशिष्ट वक्ता श्री ए.पी. पाण्डेय रहे। डॉ. अमित गोयल, शिक्षक, शिक्षा महाविद्यालय की भी उपस्थिति रही।

समापन सत्र

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में हुआ। सारस्वत अतिथि प्रेमचंद सृजनपीठ के निदेशक डॉ. जीवनसिंह ठाकुर थे। इस अवसर पर म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पत्रिका 'रचना' के शिक्षा नीति विशेषांक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। अध्यक्षता म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक श्री अशोक कड़ेल ने की। अपने सम्बोधन में उच्च शिक्षा मन्त्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि नवीन शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। विशेषकर देवभाषा संस्कृत के महत्त्व को दृष्टिगत रखा गया है। डॉ. जीवनसिंह ठाकुर ने कहा कि नई शिक्षा नीति हमारे अतीत के गौरव को प्रतिष्ठित करेगी, दासता मुक्त

समाज की स्थापना करेगी। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री अशोक कड़ेल ने कहा कि भारतीय भाषाओं में विविधता के साथ सभ्यता का समावेश है। भाषा मनुष्य को पहचान दिलाती है। भारतीय भाषाओं में माधुर्य के साथ वैज्ञानिकता है। भाषा का सम्बन्ध जीवन व्यवहार से है। कार्यक्रम में स्वागत भाषण डॉ. तुलसीदास परोहा ने दिया। रचना पत्रिका का परिचय डॉ. राजेश वर्मा ने दिया। उच्च शिक्षा सत्र का प्रतिवेदन प्रो. हरिसिंह कुशवाह तथा शालेय शिक्षा सत्र का प्रतिवेदन कु. दर्शना शर्मा ने प्रस्तुत किया। सञ्चालन डॉ. शुभम् शर्मा ने किया। कृतज्ञताज्ञापन डॉ. जफर महमूद ने किया। इस सङ्गोष्ठी में कुल 153 शिक्षक तथा विद्यार्थियों ने पञ्जीयन कराया।

- **गोद ग्राम में निःशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण सम्भाषण शिविर**

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा संचालित संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण ज्ञान विज्ञान संवर्धन केंद्र द्वारा दिनांक 2/03/2021 से 7/03/2021 तक निःशुल्क संस्कृत सम्भाषण शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण ज्ञान विज्ञान संवर्धन केंद्र के निदेशक तथा विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ मनमोहन उपाध्याय द्वारा दिनाङ्क 02/03/21 को किया गया। शिविर में युवा, छात्र तथा छोटे-छोटे बच्चे एवं वृद्धजनों की भी उपस्थिति रही। उक्त शिविर गोदग्राम मानपुर स्थित महादेव मन्दिर, में आयोजित किया गया।

- **शैक्षणिक भ्रमण**

दिनाङ्क 4/03/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के **ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग** के छात्रों तथा शिक्षकों के दल ने डोंगला स्थित पद्मश्री विष्णु श्रीधर वेधशाला तथा ठाकुर पर्वतसिंह संग्रहालय, अश्विनी शोध संस्थान, महिदपुर का शैक्षणिक भ्रमण किया। दल में विभागीय आचार्यों डॉ. शुभम् शर्मा, डॉ. उपेन्द्र भार्गव, डॉ. विजयकुमार, श्री विनोदकुमार पाण्डेय, डॉ. योगेश कुमार के साथ 24 छात्रों ने सहकार किया। डोंगला वेधशाला में प्रकल्प अधिकारी तथा वेधविधा के विद्वान् श्री घनश्याम रत्नानी ने यहाँ के ऐतिहासिक तथा ज्योतिषीय महत्त्व को दर्शाकर यन्त्रों के प्रयोग के विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया। यहाँ छात्रों ने शासकीय वराहमिहिर वेधशाला में स्थित विशाल टेलिस्कोप का दर्शन कर उसके प्रयोग के विषय में जाना। अश्विनी शोध संस्थान में प्राचीन मुद्राओं, पात्रों, पाण्डुलिपियों आदि का अवलोकन कर यहाँ के निदेशक डॉ. आर. सी. ठाकुर से इनके पुरातात्त्विक तथा वास्तु विषयक महत्त्व को जाना। यहाँ छात्रों को अञ्चल के स्वतन्त्रता सङ्ग्राम के नायक-नायिकाओं के विषय में डॉ. ठाकुर से अनेक प्रामाणिक जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

- **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस**

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अखिलेश पाण्डेय जी ने महिला दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि पुरुष एवं महिलाओं में समरसता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं में मातृशक्ति का स्वरूप भारतीय चिन्तन

परम्परा में रहा है। मुख्यातिथि के रूप में पूर्व प्रदेशाध्यक्ष विद्यार्थी परिषद् शोभाताई पैठनकर जी उपस्थित रहीं। उन्होंने मातृशक्ति को एक शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस प्रकार माँ बच्चों में संस्कारों का आधान करती है उसी प्रकार एक शिक्षक भी छात्रों के संस्कारित करता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं पर वैज्ञानिक-आध्यात्मिक एवं वैदिक दृष्टि से विचार करने की आवश्कता है। विशिष्टातिथि के रूप में उपस्थित डॉ. उमा वाजपेयी, पूर्व विभागाध्यक्ष शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, उज्जैन ने कहा कि महिला श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है। उन्होंने कल्पना चावला, कमला हेरिस जैसी महिलाओं के उदाहरण प्रस्तुत कर कहा कि आज का दिवस महिलाओं की उपलब्धियों का दिवस है। कार्यक्रम में श्रीमति पुष्पा यादव भी उपस्थित रहीं। जिन्होंने अपने जीवन के अनुभव को बताते हुए कहा कि गृहिणी होकर एक महिला को कैसे अपने दायित्व का पालन करना चाहिए। एक सकारात्मक सोच ही महिला को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक, विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. पूजा उपाध्याय, सुश्री रामकुमारी, डॉ. रूपाली सारये, श्रीमती प्रीति उपाध्याय, कु पूजा, सुश्री मीना ठक्कर समेत अध्यापकगण एवं अनेक छात्र-छात्रा कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

- **विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर**

इससे पूर्व विश्वविद्यालय की एन.एस.एस. इकाई द्वारा विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उपेन्द्र भार्गव ने बताया कि माधव चिकित्सालय के चिकित्सकीय दल की डॉ. नवनीता तिवारी तथा डॉ. बबीता गोठे ने शिक्षिकाओं तथा छात्राओं का हीमोग्लोबिन टेस्ट किया तथा छात्रों को पौष्टिक आहार की जानकारी भी दी।

- **युवा महोत्सव**

दिनाङ्क 09/03/2021 को युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्घाटन विश्वविद्यालय कइ कुलपति प्रो.अखिलेशकुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में हुआ। कुलपति प्रो.पाण्डेय ने कहा कि युवमहोत्सव के आरम्भ का मूल लोकमान्य तिलक द्वारा प्रारम्भ किया गणेश उत्सव रहा। हमारे बच्चे ऐसे आयोजनों से जुड़कर कोरोनाकालीन समस्याओं को जीतें। उन्होंने कहा कि युवा दिवस छात्रों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने का दिवस है। उपकुलपति प्रो.मनमोहन उपाध्याय ने कहा कि इस वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण यह आयोजन ऑनलाइन है, किन्तु अगले वर्ष हम पूरे उत्साह से इस आयोजन को करेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है। कुलसचिव डॉ.प्रशान्त पुराणिक ने ऑनलाइन आयोजन में जुड़े छात्रों का अभिनन्दन किया। युवमहोत्सव संयोजक डॉ.संकल्प मिश्र ने कहा कि परम्परा सतत बनी रहे, इसलिए इस वर्ष इसे ऑनलाइन आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ.तुलसीदास परौहा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। छात्रकल्याण अधिष्ठातृ डॉ.पूजा उपाध्याय ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। वित्तनियन्त्रक डॉ.आदित्य नागर ने कहा कि युवा सदैव

वृद्धों से अनुभव ग्रहण करें। उनकी सीख सदा मार्गदर्शक होती है। कार्यक्रम का सञ्चालन श्री अमित शर्मा जी ने किया।

आयोजन में कुल दस प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। काव्यपाठ, आशुभाषण, वादविवाद, संस्कृत गीत, शास्त्रार्थ प्रतियोगिताएँ गूगलमीट पर आयोजित हुईं, जबकि चित्रकला, रङ्गवल्ली, नृत्य, योगासन तथा शोधपत्रलेखन प्रतियोगिताओं में चित्र/वीडियो/पीडीएफ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की गयीं। युवमहोत्सव में कुल 56 छात्रों ने पञ्जीयन कराया।

आशुभाषण में प्रथम शुभम् शर्मा इन्दौर महाविद्यालय प्रथम, आदर्श पाण्डेय इन्दौर द्वितीय एवं अक्षत जोशी व कुणाल श्रोत्रिय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। काव्यपाठ में प्रथम स्थान स्नेहा शर्मा, द्वितीय दामिनी मोरे व तृतीय स्थान प्रिया जोशी व आदर्श पाण्डेय ने प्राप्त किया।

संस्कृत गीत में प्रथम स्नेहा शर्मा, द्वितीय राधिका व्यास एवं तृतीय प्रिया जोशी रहीं। शास्त्रार्थ में व्याकरण विभाग से प्रथम शुभांक शर्मा, द्वितीय आदित्य दत्त शर्मा, ज्योतिष विभाग में अक्षत जोशी प्रथम एवं भावेश रावल द्वितीय तथा साहित्य विभाग में दामिनी मोरे प्रथम , न्याय विभाग में शशाङ्क दुबे प्रथम, शिक्षाशास्त्र विभाग में प्रिंस तिवारी प्रथम रहे।

वादविवाद प्रतियोगिता में पूर्व पक्ष में प्रथम मानस, द्वितीय स्नेहा शर्मा व तृतीय प्रिया जोशी रहीं। वाद-विवाद उत्तर पक्ष में कुणाल श्रोत्रिय ने प्रथम, राधिका शर्मा द्वितीय व भावेश तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

नृत्य प्रतियोगिता में कृत्तिका जोशी प्रथम, दामिनी साधु द्वितीय व प्रतिष्ठा दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। रङ्गवल्ली में राधिका शर्मा प्रथम, द्वितीय स्थान पर पूजा राठौर एवं दामिनी मोरे तथा अंकिता धाकड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शोधपत्रलेखन में क्रमशः प्रथम स्थान पूजा आर्या एवं मीनाक्षी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। योगासन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान महिमा नागर ने, द्वितीय स्थान बिक्की गौड व तृतीय स्थान परिणीता शर्मा ने प्राप्त किया।

- **भारतीय स्वतन्त्रता की 75वीं वर्षगाँठ विषय पर सङ्गोष्ठी**

दिनाङ्क 12/03/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में दांडी यात्रा की आरम्भ तिथि से आयोजित **'आजादी का अमृत महोत्सव'** कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय स्वतन्त्रता की 75वीं वर्षगांठ विषय पर सङ्गोष्ठी आयोजित की गयी। इससे पूर्व गांधीनगर से आयोजित मुख्य कार्यक्रम का सीधा प्रसारण विश्वविद्यालय परिवार ने एक साथ देखा तथा प्रधानमन्त्रीजी के उद्बोधन को भी सुना। इस अवसर पर उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय की अध्यक्षता में अधिकारी, प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे। इसके पश्चात् आयोजित सङ्गोष्ठी में मुख्यवक्ता डॉ. नीरज सारवान ने दांडी यात्रा से इस अभियान को प्रारम्भ करने की प्रासङ्गिकता को स्पष्ट करते हुए कहा कि मात्र 79 सत्याग्रहियों के साथ प्रारम्भ हुई यह यात्रा दांडी में हजारों की सङ्ख्या में पहुँच जाती है। गांधीजी के कुशल नेतृत्व में हुए इस आन्दोलन की सफलता ने अहिंसक

आन्दोलनों की नींव पक्की की। गांधीजी का हर आन्दोलन आत्मनिर्भरता पर केन्द्रित था, सब साथ में कार्य करते थे और आन्दोलन लम्बे समय तक सुचारू रहते थे। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक ने इस अभियान में विश्वविद्यालय की भूमिका को इङ्गित करते हुए मालवाञ्चल के स्वतन्त्रता-सेनानियों और उनके आन्दोलनों पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा ने कहा कि गांधीजी प्रकृति के अनावश्यक दोहन को अनुचित मानते थे। यह हम सबको भी सीखना चाहिए। प्राकृतिक संसाधन सबके हैं। विश्वविद्यालय की एन.एस.एस इकाई द्वारा आयोजित इस सङ्गोष्ठी के विषय में बताते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी डॉ. उपेन्द्र भार्गव ने कहा कि इस सङ्गोष्ठी के आयोजन के साथ ही हम कार्यक्रमों की एक शृङ्खला प्रारम्भ करने जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. पूजा उपाध्याय, डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी, डॉ. संकल्प मिश्र, डॉ. शुभम् शर्मा, डॉ. विजयकुमार, डॉ. रूपाली सारये, डॉ. धर्मेन्द्र शर्मा, श्री विनोदकुमार पाण्डेय, डॉ. विजयबहादुर त्रिपाठी, सुश्री रामकुमारी, डॉ. पतञ्जलिकुमार पाण्डेय सहित प्राध्यापक तथा छात्र उपस्थित रहे।

- **पलभा-साधन**

दिनाङ्क 21/03/2021 को विषुवद् दिवस के अवसर पर महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के **ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग** द्वारा ज्योतिष की प्रायोगिक विधियों का वेधयन्त्रों के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शन किया गया। प्रायोगिक रूप से इस दिन सूर्य विषुवत रेखा का उल्लंघन करते हुए उत्तरी गोलार्ध में प्रवेश करते हैं, इस कारण वह प्रात: उदय काल में वास्तविक पूर्व से उदित होते हैं। अतः यह दिन दिक्साधन हेतु उपयुक्त होता है। इस कारण उदयकाल में विभाग द्वारा दिक्साधन (दिशा का परिज्ञान) किया गया। इस दिवस सूर्य के विषुवत् रेखा पर लम्बवत् रहने से स्थानीय मध्याह्न में अक्षांश के अनुपात में छाया की निर्मिति होती है, अतः मध्याह्न में पलभासाधन (शंकु की छाया का परिज्ञान) किया गया। विश्वविद्यालय परिसर में वेध से पलभा का अंगुलव्यंगुलात्मक मान 5/07 स्पष्ट ज्ञात किया गया तथा अक्षांश मान 23/07 आया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय अध्यापन विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा ने सफल प्रायोगिक कार्य हेतु उपस्थित आचार्यों एवं छात्रों को बधाई दी तथा विश्वविद्यालय परिसर में वेध- उपकरणों की आवश्यकता की ओर संकेत किया। ज्योतिष विभाग के समन्वयक डॉ. शुभम् शर्मा तथा सिद्धांत ज्योतिष के विशेषज्ञ आचार्य डॉ उपेन्द्र भार्गव के मार्गदर्शन में प्रायोगिक प्रदर्शन किया गया। डॉ. भार्गव ने पलभा के महत्व पर प्रकाश डाला। विभागीय आचार्यों डॉ. विजयकुमार, डॉ. विनोदकुमार पाण्डेय तथा डॉ. योगेशकुमार द्वारा दिक्साधन एवं पलभासाधन में तकनीकि सहयोग प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो अखिलेशकुमार पाण्डेय जी ने वैज्ञानिक महत्त्व के इस दिवस पर प्रायोगिक कार्य हेतु विश्वविद्यालय के शिक्षकों तथा छात्रों को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय ने छात्रों को ऐसे प्रायोगिक कार्यों से सदैव जुड़ने का सन्देश प्रेषित

किया। कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक ने भी इस हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कोविड प्रकोप को दृष्टिगत रखते हुए इस आयोजन में सीमित सङ्ख्या में सहभागिता की गयी।

- **टीकाकरण उत्सव में योगदान**

कोविड संक्रमण की बढ़ती रफ्तार से समुचित बचाव एवं सुरक्षा को वरीयता देते हुए दिनांक 11 से 14 अप्रैल तक कोरोनावायरस से बचाव हेतु शासन द्वारा आयोजित वैक्सिनेशन जनजागरुकता अभियान को सफल बनाने की अपील विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा की गयी। प्रो पाण्डेय ने कहा कि राज्यपाल महोदया के प्रेरणा से इस अभियान में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और छात्र सभी अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह करें। जो भी शिक्षक अथवा जो विद्यार्थी जहाँ पर भी निवास कर रहे हैं, वे अपने आसपास के क्षेत्रों में व्यक्तियों को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित करें। कुलपति महोदय की अपील पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने इस अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। शिक्षकों ने व्हाट्स एप तथा फोन द्वारा छात्रों से सम्पर्क कर उनके अभिभावकों के वैक्सीनेशन हेतु प्रेरित किया। विश्वविद्यालय की रा.से.यो. इकाई के छात्रों ने गली मोहल्लों में जाकर लोगों को वैक्सीनेशन हेतु प्रेरित किया तथा वैक्सीन से सम्बन्धित भ्रान्तियों का निवारण किया। साथ ही छात्रों ने वैक्सीनेशन सेंटर में कार्यरत स्वास्थ्यकर्मियों का अभिनन्दन किया एवं सर्वे सन्तु निरामयाः के सन्देश को स्पष्ट किया।

ऑनलाइन वर्ग

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन के संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण एवं ज्ञान विज्ञान संवर्धन केंद्र द्वारा कोरोना कर्फ्यू के समय विभिन्न ऑनलाइन वर्ग आयोजित किये।
दिनाङ्क 07 से 30/04/2021 तक सन्धि वर्ग तथा दिनांक 1 से 15/05/2021 तक समास वर्ग का ऑनलाइन संचालन किया गया। दिनांक 22/03/2021 से 05/04/2021 तक 15 दिवसीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण शिविर संचालित किया गया। समापन कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय ने कहा कि सभी शिक्षकों को अपने जैसे शिक्षक तैयार करने चाहिए और जो कुछ भी हम जानते हैं उस ज्ञान को अपने छात्र में संप्रेषित करना चाहिए। इस प्रशिक्षण शिविर में 38 शिक्षकों ने सहभागिता कर संस्कृत संभाषण शिविर संचालित करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनांक 18 से 31/05/2021 तक पन्द्रहदिवसीय ऑनलाइन कारकवर्ग का आयोजन किया गया। इस वर्ग का समापन कार्यक्रम महर्षि विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

इस वर्ग में भारत के विभिन्न 14 राज्यों (उ.प्र., दिल्ली, हरियाणा, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, गोवा, महाराष्ट्र, पश्चिमबंगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, चण्डीगढ़, उत्तराखंड, कोलकाता आदि एवं यू.ए.ई., दुबई एवं केनेडा आदि से 137 प्रतिभागियों ने आवेदन किया। इसमें विविध क्षेत्र के जन जैसे- डाक्टर, इन्जीनियर, वकील, वैज्ञानिक, शिक्षक, कृषक, शोधछात्र, छात्र एवं गृहिणी आदि जुड़े।

- **पाठ्यक्रम पर परिसंवाद**

दिनांक 15/05/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा नवीन शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम निर्माण तथा संशोधन को लेकर ऑनलाइन शिक्षक-परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने की। अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो. पाण्डेय ने कहा कि वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन द्वारा अग्रिम सत्र में राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के क्रियान्वयन का निर्णय लिया गया है। इस नीति में संस्कृत के संरक्षण की भी बात है तो वहीं रोजगारपरक, कौशलोन्मुखी पाठ्यक्रमों को भी प्रोत्साहित किया गया है। हमारा विश्वविद्यालय संस्कृत विश्वविद्यालय है। संस्कृत और इससे सम्बद्ध पारम्परिक विषय स्वभावतः ही विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाते हैं। शासन द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण सम्पादित हो ही रहा, किन्तु हमें भी रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए। डिग्री के साथ-साथ डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों को शिक्षानीति की भावना के अनुरूप सम्पादित अथवा निर्मित किया जाना है। कौन से नवीन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये जा सकते? **श्रेष्ठ भारत के उद्देश्य** को साकार करने में इनकी क्या और कैसी भूमिका हो सकती? इस पर समस्त शिक्षक मन्थन कर कार्य करें। उपकुलपति प्रो. मनमोहन उपाध्याय ने कहा कि हमारे डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों में पहले से ही आत्मनिर्भरता की ओर ध्यान दिया गया है। हम चरणबद्ध प्रक्रिया में नवीन डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम प्रारम्भ करेंगे। कुलसचिव डॉ.. प्रशान्त पुराणिक ने पर्यटन से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों की ओर ध्यानाकर्षण किया। विभागाध्यक्ष डा. तुलसीदास परौहा समेत समस्त शिक्षकों ने परिसंवाद में विचार विनिमय किया।

विश्व पर्यावरण दिवस

दिनांक 05/06/21 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्य किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय एवं मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ.अशोक कड़ेल ने विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन के समीप में बरगद का वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया। इस अवसर पर माननीय कुलपतिजी ने कहा कि संस्कृत साहित्य एवं भारतीय विद्याओं में प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के जो सरल सहज एवं नैसर्गिक उपाय बताए गए हैं हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने वराहमिहिर के ग्रन्थ बृहत्संहिता में वर्णित वृक्षायुर्वेद का विशेष रूप से उल्लेख किया। डॉ. कड़ेल ने वृक्षों के महत्त्व एवं स्वभाव को साहित्य के आलोक में समझने का आग्रह किया। इस अवसर पर उपकुलपति डॉ.. मनमोहन उपाध्याय, कुलसचिव डॉ. प्रशान्त पुराणिक, विभागाध्यक्ष डॉ. तुलसीदास परौहा, एन.एस.एस.प्रभारी डॉ. उपेन्द्र भार्गव एवं छात्रवृत्ति प्रभारी डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी उपस्थित रहे। व्यवस्थापन केशव श्रोत्रिय, महेन्द्र उपाध्याय, शंकर सिंह खीची ने किया।

- **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस**

दिनाङ्क 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन, म०प्र० द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा विभिन्न रोगों के उपचार में योग के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इससे पूर्व, उपकुलपति डॉ. मनमोहन उपाध्याय के द्वारा प्रस्तावना भाषण दिया गया। उन्होंने कहा कि अभी हमने केवल आसन तथा प्राणायाम को ही अपनाया है, यदि अपने जीवन मे सम्पूर्ण अष्टाङ्ग योग को अपना लिया जाए तो हमारा कितना उद्धार हो सकता है। कार्यक्रम में योगाध्यापक भानुप्रताप बुन्देला के द्वारा योगाभ्यास करवाया गया। कृतज्ञताज्ञापन कुलसचिव डॉ.. प्रशान्त पुराणिक द्वारा किया गया। इससे पूर्व एक सप्ताह तक **ऑनलाइन योग शिविर** सञ्चालित रहा।

युवा महोत्सव

दिनाङ्क 09/03/2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में युव-महोत्सव का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.अखिलेशकुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में हुआ। कुलपति प्रो.पाण्डेय ने कहा कि युवमहोत्सव के आरम्भ का मूल लोकमान्य तिलक द्वारा प्रारम्भ किया गणेश उत्सव रहा। हमारे बच्चे ऐसे आयोजनों से जुड़कर कोरोनाकालीन समस्याओं को जीतें। उन्होंने कहा कि युवा दिवस छात्रों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने का दिवस है। उपकुलपति प्रो.मनमोहन उपाध्याय ने कहा कि इस वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण यह आयोजन आनलाइन है, किन्तु अगले वर्ष हम पूरे उत्साह से इस आयोजन को करेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है। कुलसचिव डॉ.प्रशान्त पुराणिक ने ऑनलाइन आयोजन में जुड़े छात्रों का अभिनन्दन किया। युवमहोत्सव संयोजक डॉ.संकल्प मिश्र ने कहा कि परम्परा सतत बनी रहे इसलिए इस वर्ष इसे ऑनलाइन आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ.तुलसीदास परौहा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। छात्रकल्याण अधिष्ठाता डॉ.पूजा उपाध्याय ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। वित्तनियन्त्रक डॉ.आदित्य नागर ने कहा कि युवा सदैव वृद्धों से अनुभव ग्रहण करें। उनकी सीख सदा मार्गदर्शक होती है। कार्यक्रम का सञ्चालन श्री अमित शर्मा जी ने किया।

आयोजन में कुल दस प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। काव्यपाठ, आशुभाषण, वादविवाद, संस्कृत गीत, शास्त्रार्थ प्रतियोगिताएँ गूगलमीट पर आयोजित हुईं, जबकि चित्रकला, रङ्गवल्ली, नृत्य, योगासन तथा शोधपत्रलेखन प्रतियोगिताओं में चित्र/वीडियो/पीडीएफ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की गयीं। युवमहोत्सव में कुल 59 छात्रों ने पञ्जीयन कराया।

आशुभाषण में प्रथम शुभम् शर्मा इन्दौर महाविद्यालय प्रथम, आदर्श पाण्डेय इन्दौर द्वितीय एवं अक्षत जोशी व कुणाल श्रोत्रिय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **काव्यपाठ** में प्रथम स्थान स्नेहा शर्मा, द्वितीय दामिनी मोरे व तृतीय स्थान प्रिया जोशी व आदर्श पाण्डेय ने प्राप्त किया। **संस्कृत गीत** में प्रथम स्नेहा शर्मा, द्वितीय राधिका व्यास एवं तृतीय प्रिया जोशी रहीं। **शास्त्रार्थ** में व्याकरण विभाग से प्रथम शुभांक शर्मा, द्वितीय आदित्य दत्त शर्मा, ज्योतिष विभाग में अक्षत जोशी प्रथम एवं भावेश रावल द्वितीय तथा साहित्य विभाग में दामिनी मोरे प्रथम , न्याय विभाग में शशाङ्क दुबे प्रथम, शिक्षाशास्त्र विभाग में प्रिंस तिवारी प्रथम रहे। **वादविवाद प्रतियोगिता** में पूर्व पक्ष में प्रथम मानस, द्वितीय स्नेहा शर्मा व तृतीय प्रिया जोशी रहीं। वाद-विवाद उत्तर पक्ष में कुणाल श्रोत्रिय ने प्रथम, राधिका शर्मा द्वितीय एवं भावेश तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **नृत्य प्रतियोगिता** में कृत्तिका जोशी प्रथम, दामिनी साधु द्वितीय एवं प्रतिष्ठा दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **रङ्गवल्ली** में राधिका शर्मा प्रथम, द्वितीय स्थान पर पूजा राठौर एवं दामिनी मोरे तथा अंकिता धाकड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **शोधनिबन्धलेखन** में ने क्रमशः प्रथम स्थान पूजा आर्या एवं मीनाक्षी वर्मा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **योगासन प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान महिमा नागर ने, द्वितीय स्थान बिक्की गौड एवं तृतीय

स्थान परिणीता शर्मा ने प्राप्त किया। **चित्रकला** में शिवांशु जोशी ने प्रथम, सागर शर्मा ने द्वितीय तथा पूर्ति हुंडेत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

समापन सत्र का सञ्चालन श्री शैलेन्द्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालयों के आचार्यगण तथा छात्र भी गूगल मीट के माध्यम से जुड़े। सभी ने प्रतिभागियों का अभिनन्दन किया। वादविवाद में 10, नृत्य में 06, काव्यपाठ में 15, योगासन में 15, शास्त्रार्थ में 07, आशुभाषण में 10, संस्कृत गीत में 09, रङ्गवल्ली में 12, चित्रकला में 07 तथा शोधनिबन्ध लेखन में 05 विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

AWARENESS PROGRAMME

1. Public awareness in Godgram - दिनांक 16/01/ को 2021महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन की राष्ट्रीय सेवा योजना)NSSइकाई द्वारा गोदग्राम चंदेसरी (एवं मनपुरा कोरोना**वैक्सीनेशन के लिए जागरूकता कार्यक्रम** का आयोजन किया गया।
2. Free Sanskrit training conference camp in Godagram - 02/03/ से2021 07/03/ तक चंदेसरी एवं मनपुर दोनों गाँवो में 2021**निशुल्कसंस्कृत संभाषण शिविर :** का आयोजन किया गया।
3. Special health testing camp - 05/05/ को माधव अस्पताल की मदद से 2021NSS द्वारा एक विशेष **स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन** किया गया।
4. Online Sanskrit teacher training camp - महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन एवं संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण एवं ज्ञान विज्ञान संवर्धन केंद्र द्वारा कोरोना कर्फू के समय **ऑनलाइन माध्यम से संस्कृत संभाषण** शिविर का आयोजन किया गया।
5. The work of publicity of government scheme in village - महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा दिनांक 05/03/को चंदेसरी एवं मनपुरा 2021 ,प्रसार-दोनों ग्राम में सरकारी योजनाओ का प्रचार**जन जागरूकता कार्यक्रम** एवं प्रशिक्षण वर्ग आदि का कार्य सुचारू रूप से किया गया।
6. Outreach Program in lap villages - दिनांक 02/03/को गोदग्राम मानपुर में 2021 क विश्वविद्यालय द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण सम्मेलन शिविर कामहर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदि आयोजन किया गया।
7. Easy transportation - धार्मिक नगरी एवं पर्यटन स्थल होने के कारण यहां घंटे 24 परिवहन स ुविधा उपलब्ध हैकिलोमीटर 5 विश्वविद्यालय नानाखेड़ा बस स्टैंड से केवल , की दूरी पर स्थित है, इसलिए विश्वविद्यालय तक पहुंचने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधन आसानी से उपलब्ध हैं।

8. Covid-19 Awareness Campaign for vaccination and distribution of masks - कोविड-19 टीकाकरण एवं मास्क वितरण हेतु जागरूकता अभियान।
9. Need of law awarness in women's life – विश्वविद्यालय की महिला समिति एवं राष्ट्रिय महिला आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 08.02.2021 को 'महिला जीवन में कानून सम्बन्धित ज्ञान की आवश्यकता' इस विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यवक्त्री के रूप में उपस्थित श्रीमती श्यामला एस.कुन्दर, सदस्य, राष्ट्रीय महिला आयोग, उडुपी ने अपना उद्बोधन प्रदान किया। इस विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की सभी महिला प्राध्यापिकाएं कर्मचारी छात्राएं एवं अन्यजन उपस्थित रहें।
10. Savings account opening programmed to encourage women employees to save – दिनांक 06 मार्च 2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं भारतीय डाक विभाग संभागीय कार्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस को ध्यान में रखते हुए विशेष अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र छात्राओं के लिए डाक विभाग की सेवाओं एवं लाभ से परिचय कराया गया।

11.एकदिवसीया NAAC विषयक कार्यशाला

दिनांक 20 नवम्बर 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय एवं आतंरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों हेतु एकदिवसीया NAAC विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यक्रम के मुख्य प्रशिक्षक के रूप में प्रो.शैलेन्द्र कुमार शर्मा,कुलानुशासक, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन उपस्थित रहे ।

12.राष्ट्रीयमूल्याङ्कनप्रत्यायनप्रक्रिया कार्यशाला

दिनांक 09 नवम्बर 2020 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय एवं आतंरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों हेतु एकदिवसीया राष्ट्रीयमूल्याङ्कनप्रत्यायनप्रक्रिया कार्यशाला कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

13.ऑनलाइन कोरोना बचाव एवं सुरक्षा कार्यशाला

दिनांक - 25 नवम्बर, 2020 को विश्वविद्यालय द्वारा एकदिवसीय ऑनलाइन माध्यम से कोराना बचाव एवं सुरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त कर्मचारीगण उपस्थिति रहे।

14.**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं का क्रियान्वयन**

दिनांक 21 फरवरी 2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं का क्रियान्वयन विषयक राष्ट्रीय शोधसंगोष्ठी का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

15.**ऑनलाइन वित्त प्रबन्धन कार्यशाला**

दिनांक 15 मार्च 2021 को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में एकदिवसीय ऑनलाइन माध्यम से वित्त प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त कर्मचारीगण उपस्थिति रहे।

16.दूर्गापूजनपाठ विधान प्रशिक्षण

दिनांक- 30 मार्च 2021 को विश्वविद्यालय के संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षणज्ञान विज्ञान संवर्द्धन केन्द्र द्वारा तथा वेद एवं व्याकरण विभाग के सहयोग से ऑनलाइन माध्यम से दूर्गापूजनपाठ विधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों ने सहभागिता प्रदान की।

- **कालिदास समारोह में उपलब्धि**

अखिल भारतीय संस्कृत अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र वेंकटेश अग्निहोत्री ने प्रथम स्थान अर्जित कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

- **जनसुनवाई**

विश्वविद्यालय में छात्र समस्या निवारण हेतु प्रत्येक मंगलवार को जनसुनवाई का आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्रों की समस्याओं पर विचार किया जाता है। आचार्य, एम.ए., बी.ए. आदि के छात्रगण सम्मिलित हुए।

- **परीक्षा परिणाम**

विश्वविद्यालय द्वारा सभी परीक्षाओं के परीक्षाफल शासन द्वारा कोविडकाल के कारण निर्धारित ओपन बुक परीक्षा के कैलेन्डर के अनुसार समय पर घोषित किया गया।

विश्वविद्यालयीन प्रकाशन

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा शोध, अनुसंधान एवं गवेषणा की प्रवृत्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से त्रैमासिक सान्दर्भिकशोधपत्रिका **पाणिनीया ISSN-2321-7626** का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाता है। पत्रिका में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों के शोधालेख प्रकाशित किये जाते हैं।

विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालय

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों, शोधार्थियों की अकादमिक सुविधा के लिए विश्वविद्यालय द्वारा समृद्ध ग्रन्थालय स्थापित किया गया है। ग्रन्थालय में छात्रों की सुविधा के लिये तथा शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वेद,व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, उपनिषद् आदि के संस्कृत ग्रन्थ तथा सन्दर्भ ग्रन्थ, कोषग्रन्थ, आधुनिक ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकि ग्रन्थ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। वर्तमान में पुस्तकालय में विविध विषयों की 3500 से अधिक शीर्षक उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी तथा शोध पत्रिकाएँ भी प्राप्त की जा रही हैं। शोधोपयोगी सान्दर्भिक ग्रन्थों का क्रयण भी विचाराधीन है।

- **गोदग्राम**

विश्वविद्यालय द्वारा दो ग्राम गोद लिए गये हैं। ग्राम चन्देसरी (प्रेमनगर) तथा मानपुरा में शासकीय योजनाओं का प्रचार, जनजागरुकता कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण वर्ग आदि के कार्य सुचारु हैं।

महाविद्यालयीन गतिविधियाँ

(1) शासकीय अभयानन्द संस्कृत महाविद्यालय, कल्याणपुर, जिला-शहडोल (म.प्र.)

महाविद्यालय में मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, शहीद दिवस, मतदाता दिवस, विश्व योग दिवस आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(2) शासकीय संस्कृत महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, संस्कृत सप्ताह, गांधीजयन्ती, सरस्वती जन्मोत्सव आदि कार्यक्रमों का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत व्याख्यान का आयोजन किया गया। गोदग्राम में एन.एस.एस. द्वारा पौधारोपण किया गया। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. बालकृष्ण शर्मा की दो पुस्तकों, **कोरोना-कोपशतकम्** तथा **ध्वनिप्रकाशे मुक्तकविमर्शः** का प्रकाशन हुआ। छात्रों ने सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं अन्य सहगामी कार्यक्रमों में भाग लेकर महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

(3) शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, भितरी, जिला-सीधी (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह, गीता जयन्ती, विवेकानन्द जयन्ती, विश्व योग दिवस तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

(4) नगर निगम श्री लोकनाथ शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, गोविन्दगंज, जबलपुर (म.प्र.)

महाविद्यालय में इस सत्र में प्रवेश उत्सव, स्वतन्त्रता दिवस, शिक्षक दिवस, गांधी जयन्ती, शिक्षण संगोष्ठी, शैक्षणिक भ्रमण, वृक्षारोपण कार्यक्रम, गुरुपूर्णिमा महोत्सव आदि का आयोजन किया गया।

(5) श्री रामनाम संस्कृत महाविद्यालय, अक्षयवट, चित्रकूट, जिला-सतना (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह, सम्भाषण शिविर, रामनवमी पर्व, वाल्मीकि समारोह आदि विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

(6) शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, देवेन्द्रनगर, पन्ना (म.प्र.)

महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस, गांधी जयन्ती, युवा दिवस, संविधान दिवस तथा विभिन्न क्रीडा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

(7) शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

शासकीय संस्कृत महाविद्यालय इन्दौर में प्रवेश उत्सव कार्यक्रम, शिक्षक अभिभावक योजना, पूर्व छात्र संगठन, संस्कृत सप्ताह, गुरु पूर्णिमा, तुलसी जयन्ती, सद्भावना दिवस, पर्यावरण संरक्षण आदि अनेक कार्यक्रमों तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विवेकानन्द करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा ऑनलाइन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेमिनार एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा मास्क जागरुकता, नशामुक्त भारत अभियान आदि कार्य किये गये। विश्वविद्यालय के युवमहोत्सव में महाविद्यालय के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

(8) श्री मानमल मीमराज रुइया, शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस, संस्कृत सप्ताह, शिक्षक दिवस, मतदाता जागरुकता दिवस, वसन्त उत्सव, संविधान दिवस, सुशासन दिवस आदि विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के छात्रों ने विश्वविद्यालय के युवमहोत्सव में सहभागिता की। नशामुक्ति अभियान, गुणवत्ता विकास कार्यशाला, आजादी का अमृत महोत्सव आदि का आयोजन किया गया।

(9) ऋषि कुमार संस्कृत महाविद्यालय, पीली कोठी, चित्रकूट, जिला-सतना (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(10) शासकीय रामानंद संस्कृत महाविद्यालय, लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह सम्बन्धी गतिविधियाँ, श्लोकपाठ, संस्कृत भाषण आदि के साथ विवेकानन्द करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ सञ्चालित हुई। एन एस एस द्वारा बररखा गोद ग्राम में कार्य किये गये।

(11) श्री गणेश दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

महाविद्यालय द्वारा संस्कृत, प्राकृत तथा पाली भाषाओं के प्रचार प्रसार के साथ विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन किये गये।

(12) श्री रावतपुरा सरकार संस्कृत महाविद्यालय, रावतपुरा धाम (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह, स्वतन्त्रता दिवस, शिक्षक दिवस, गांधी जयन्ती आदि पर्व मनाये गए। महाविद्यालय में विभिन्न क्रीडा तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शिक्षक दिवस पर सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान किया गया। छात्रों को अयोध्या के शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया गया।

(13) श्री गणेश संस्कृत महाविद्यालय, गढ़ाकोटा, जिला सागर (म.प्र.)

महाविद्यालय में विभिन्न गतिविधियों का ऑनलाइन सञ्चालन किया गया।

(14) शासकीय वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)

महाविद्यालय में वसन्तपञ्चमी पर सरस्वती पूजन आदि गतिविधियाँ सञ्चालित हुई।

(15) श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया, (म.प्र.)

महाविद्यालय में संस्कृत सप्ताह, शिक्षक दिवस, गांधी जयन्ती, लालबहादुर शास्त्री जयन्ती, धन्वन्तरी जयन्ती, गीता जयन्ती, युवा महोत्सव, माँ पीताम्बरा जयन्ती आदि विभिन्न गतिविधियों का सञ्चालन किया गया। दशदिवसीय संस्कृत सम्भाषण शिविर का सञ्चालन भी किया गया।

(16) शासकीय पुरुषोत्तम संस्कृत महाविद्यालय, खजुरीताल सतना (म.प्र.)

महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस आदि पर्व मनाये गये तथा विभिन्न क्रीडा एवं सांस्कृतिक गतिविधिओं का आयोजन किया गया।

उपसंहार

प्रतिवेदनाधीन वर्ष में राज्यपाल सचिवालय, मध्यप्रदेश शासन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, समस्त सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य, महाविद्यालयों के शिक्षक और छात्र, समाचार पत्रों, विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के नागरिकगणों, विश्वविद्यालय अध्यापन विभागों के अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त सहयोग और सहायता के लिये विश्वविद्यालय कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

कुलसचिव